वर्ष- 04 अंक -03 अगस्त 2026 मूल्य - 50 रू.

लाईफ वर्सिटी

छतीसगढ़-मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित

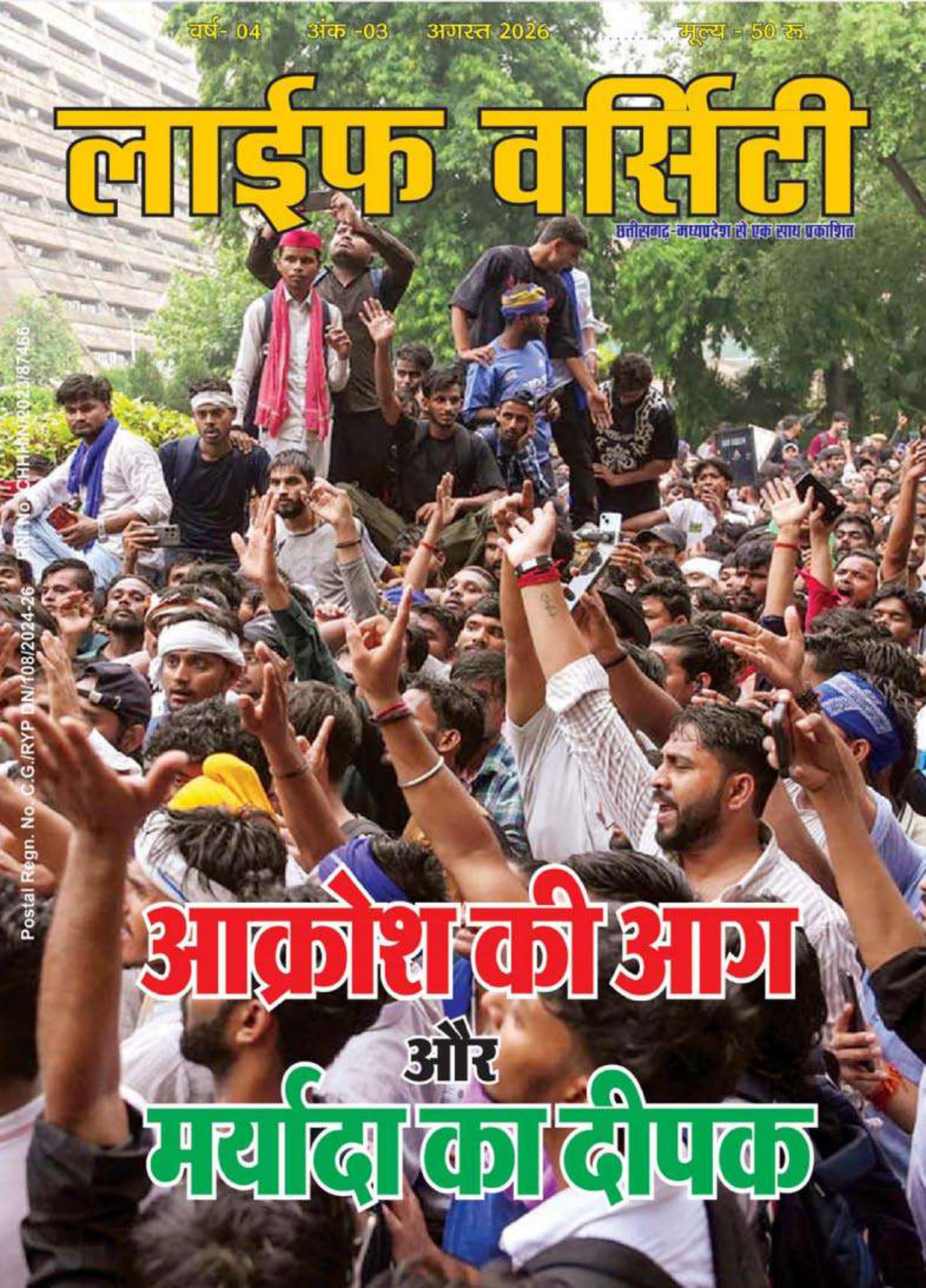

आक्रोश की आग और मर्यादा का दीपक

Postal Regn. No. C.G./RYP DN/108/2024-26 RNI NO. CHHHIN/2023/87466

www.phzinfo.com
Positive Health Zone
Integrated Holistic
Health Care System
Unique Wellbeing Center
Holistic Healthcare Team
Our INTEGRATED SERVICES
Holistic Path Of Wellness & Wellbeing
MIND BRAIN BODY SOUL
M.B.B.S
1 Personal Energy Blueprint at Quantum Veda Lab with Latest Quantum Devices-
Aura, Chakra, Biofield, Lifeforce Energy Analysis.
BEFORE
AFTER
Bio-Well
2 Digital Nadi Parikshan Modern Nadi Veda Pulse -
Personality Analysis Body Type, Mind Type, Energy Type.
3 Life Style Clinic
Personalised Diet Plan, Lifestyle Plan, Day Plan, Detox Plan as per your Quantum Analysis.
DETOX
4 Body Detox & Rejuvenation with Kerala Ayurveda Panchkarma.
डॉ. रमेश सी. नायर
5 Mind Detox & Stress Management with NLP & Counselling.
LIFE COACHING
6 Inner Alingment, Chakra Balancing with PNP Meditation.
Get In Touch
9109185028, 9109185025
A-41, Amrapali Society,
Near Ganga Diagnostics, Raipur, Chhattisgarh
www.phzinfo.com

सम्पादक

नरेन्द्र कुमार पाण्डेय

प्रबंधक

हर्षित पाण्डेय

सलाहकार मण्डल

डॉ अनिल गुप्ता	रायपुर
डॉ उदयभान सिंह चौहान	रायपुर
प्रो. डॉ शुभ्रा सान्याल	नई दिल्ली
प्रो तपन मोहन्ति	ओड़िसा

छत्तीसगढ़ कार्यालय

ए-32, आम्रपाली सोसाइटी, कलर्स मॉल के पीछे, पचपेड़ी नाका रायपुर (छ.ग.)

मो. 88171-94979

मध्यप्रदेश कार्यालय

अनामिका पाण्डेय

गोकुलधाम बेलौहान टोला, सामान, रीवा मप्र

प्रतिनिधि

अम्बुज अग्निहोत्री	जबलपुर
संजीव पाण्डेय	भोपाल
राजेश सिंह	बिलासपुर

कानूनी सलाहकार

संजयेंदु पंड्या

परिकल्पना

रजनीकांत पाण्डेय

समाचार स्त्रोत हमारे सभी संवाददाता/प्रतिनिधि। संदर्भ सामग्री: इंटरनेट, प्रमुख समाचार पत्र एवं नामचीन पत्रिकाओं से सादर साभार। विवादग्रस्त न्यायिक प्रकरणों का कार्यक्षेत्र रायपुर न्यायालय रहेगा।

अंदर के पृष्ठों पर

03 आक्रोश की आग और मर्यादा का दीपक

10 खनिज प्रदेश से निवेश प्रदेश तक

7 किले दरक रहें या मतदाता विकल्प तलाश रहा?

22 जशपुर- जहां जंगल मुस्कुराते हैं

18 उज्जैन का विकास मॉडल: जमीन किसकी, लाभ किसका?

25 बारूद की धरती पर किताबों की रोशनी

अधिकार मिले, लेकिन ...	12
आत्मनिर्भर नारी, समृद्ध छत्तीसगढ़	15
हरेली... जब माटी....	16
..मध्यप्रदेश के पांच कॉरिडोर	21
चाहती क्या है Gen Z	28
क्या कहता है नाग का रहस्य	32

SCAN & PAY

UPI ID: 329944413263914@cnrb

लाईफ वर्सिटी के प्रचार–प्रसार में सहयोग करें।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक - नरेन्द्र कुमार पाण्डेय द्वारा बुरहानी प्रिंटर्स, सत्ती बाजार रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं 6, विकास विहार कालोनी, सांई वाटिका,जोरातालाब के पास रायपुरा, रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक- नरेन्द्र कुमार पाण्डेय, मो. 88171-94979

E-mail : scgnewsraipur@gmail.com | www.scgnews.in

देश से प्रेम भी और सवाल भी !

इस वर्ष का स्वतंत्रता दिवस केवल तिरंगा फहराने और राष्ट्रगान गाने का अवसर नहीं है। यह उस सवाल पर विचार करने का भी समय है, जो आज भारत की राजनीति, समाज और युवाओं के बीच खड़ा है–क्या नई पीढ़ी की देशभक्ति पुरानी पीढ़ी से अलग है?

पिछले कुछ महीनों में देश ने एक नया दृश्य देखा। सड़कों पर उतरी Gen Z। हाथों में डिग्री थी, आंखों में रोजगार का सवाल था और सोशल मीडिया उनकी आवाज का मंच। परीक्षा घोटालों, शिक्षा व्यवस्था और अवसरों की कमी को लेकर हुए आंदोलनों ने सत्ता, विपक्ष और समाज–सभी को चौंकाया।

नरेन्द्र कुमार पाण्डेय
सम्पादक

एक ओर वंदे मातरम् को कानूनी संरक्षण देने का फैसला है, दूसरी ओर युवाओं की वह पीढ़ी है जो रोजगार, शिक्षा, अवसर, पारदर्शिता और अपनी आवाज सुने जाने की मांग कर रही है। सवाल यह नहीं कि इनमें कौन ज्यादा देशभक्त है। असली सवाल है–आने वाले भारत में देशभक्ति का अर्थ क्या होगा?

इसी दौर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत का बयान महत्वपूर्ण है। उन्होंने प्रदर्शन करने वाले युवाओं को राष्ट्रविरोधी नहीं कहे जाने की बात कही और माना कि आज की पीढ़ी आदेश से ज्यादा तर्क और उपदेश से ज्यादा संवाद चाहती है। यह बदलते भारत को समझने का संकेत है।

आज का युवा न 1975 का युवा है, न 1991 का। Gen Z ने इंटरनेट के साथ दुनिया देखी है और सोशल मीडिया के जरिए सत्ता से सीधे सवाल करना सीखा है। वह हर विचार को केवल इसलिए स्वीकार करने को तैयार नहीं कि वह परंपरा से चला आ रहा है।

उसके लिए देशभक्ति केवल तिरंगे को सलाम करना नहीं है। वह पूछता है–अगर मैं पढ़ा-लिखा हूं तो रोजगार क्यों नहीं? अगर संविधान अधिकार देता है तो मेरी आवाज क्यों नहीं सुनी जाती? अगर भ्रष्टाचार गलत है तो जवाबदेही क्यों नहीं?

स्वतंत्रता आंदोलन में देशभक्ति का अर्थ विदेशी शासन के खिलाफ संघर्ष था। आजादी के बाद इसका अर्थ राष्ट्र निर्माण, विकास और सामाजिक एकता से जुड़ा। अब 21वीं सदी की तीसरी दशक में इसका एक नया अर्थ उभर रहा है–सवाल पूछने की स्वतंत्रता और जवाब देने की जिम्मेदारी।

वंदे मातरम् को कानूनी संरक्षण मिलना राष्ट्रीय सम्मान का विषय है। राष्ट्रगीत का सम्मान होना ही चाहिए। लेकिन कानून सम्मान की रक्षा कर सकता है, सम्मान पैदा नहीं कर सकता।जिस दिन युवा महसूस करेगा कि देश उसकी बात सुनता है, उसकी देशभक्ति को किसी प्रमाणपत्र की जरूरत नहीं होगी।

Gen Z को भी समझना होगा कि विरोध और विघटन में फर्क है। सवाल पूछना लोकतांत्रिक अधिकार है, लेकिन संस्थाओं को तोड़ना समाधान नहीं। वहीं सत्ता को भी समझना होगा कि हर असहमति राष्ट्रविरोध नहीं होती।

2047 के विकसित भारत का सपना इन्हीं युवाओं के कंधों पर है। इसलिए सत्ता को युवाओं से डरने के बजाय उन्हें सुनना होगा और युवाओं को व्यवस्था को तोड़ने के बजाय उसे बेहतर बनाने की जिम्मेदारी उठानी होगी।

शायद भविष्य की देशभक्ति का सबसे बड़ा अर्थ यही होगा–देश से प्रेम करना, लेकिन देश को बेहतर बनाने के लिए उससे सवाल पूछने का साहस भी रखना।

क्योंकि राष्ट्र केवल वह नहीं जिसके लिए लोग जान देते हैं। राष्ट्र वह भी है, जिसके भविष्य को बेहतर बनाने के लिए नई पीढ़ी सवाल उठाती है। और शायद यही स्वतंत्र भारत की सबसे सच्ची देशभक्ति है।

आक्रोश की आग और मर्यादा का दीपक

स्वतंत्रता संग्राम से Gen-Z तक- क्या हमारे आंदोलनों ने संघर्ष की आत्मा खो दी है?

एक युवा के भीतर यह प्रश्न जन्म लेता है– 'क्या मेरी मेहनत का कोई मूल्य है?' इस प्रश्न को केवल राजनीतिक नारा समझना भूल होगी।यह हमारे समय का सामाजिक प्रश्न है। इसलिए युवाओं का आक्रोश सुनना जरूरी है। लेकिन आक्रोश को सुनना और आक्रोश के हर रूप को स्वीकार कर लेना– दो अलग बातें हैं। यहीं लोकतंत्र की असली परीक्षा शुरू होती है।

– नरेन्द्र पाण्डेय,

भारत में विरोध कोई आधुनिक आविष्कार नहीं है। यह उस सभ्यता की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है, जिसने प्रश्न पूछने को ज्ञान की पहली सीढ़ी माना। नचिकेता ने मृत्यु के देवता से प्रश्न किया था। गार्गी ने याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ किया था। अर्जुन ने रणभूमि में श्रीकृष्ण से अपने संशय का समाधान मांगा था।अर्थात भारतीय संस्कृति ने कभी मौन को ही सद्गुण नहीं माना। यहां प्रश्न भी साधना है और असहमति भी संवाद का एक रूप। लेकिन इस संस्कृति ने एक दूसरी बात भी सिखाई—स्वतंत्रता के साथ संयम, अधिकार के साथ कर्तव्य और शक्ति के साथ मर्यादा।

आज जब देश की सड़कों पर युवाओं का आक्रोश दिखाई देता है, जब पेपर लीक, बेरोजगारी, भर्ती में देरी और संस्थागत विफलताओं के खिलाफ आवाजें उठती हैं, तब हमें केवल यह

नहीं देखना चाहिए कि भीड़ कितनी है। हमें यह देखना होगा कि उस भीड़ के भीतरकितना दर्द है, कितना सत्य है और कितनी दिशा है। क्योंकि भीड़ का आकार इतिहास नहीं बनाता। इतिहास उस विचार से बनता है, जिसके लिए भीड़ खड़ी होती है।

स्वतंत्रता आंदोलन की सड़क और आज की सड़क

हम अक्सर आज के आंदोलनों की तुलना स्वतंत्रता आंदोलन से करते हैं लेकिन इतिहास के प्रति ईमानदार रहना होगा।अंग्रेजी शासन के समय भारत की जनता अपने शासन की वास्तविक मालिक नहीं थी। सत्ता विदेशी थी। कानून बनाने की सर्वोच्च शक्ति विदेशी शासन के हाथों में थी। भारतीयों के पास आज जैसी सार्वभौमिक लोकतांत्रिक भागीदारी नहीं थी। इसलिए स्वतंत्रता आंदोलन का संघर्ष मूलत: स्वराज के लिए था।लेकिन उस संघर्ष की महानता केवल उसके उद्देश्य में नहीं थी।उसकी महानता उसकेचरित्रमें भी थी।महात्मा गांधी ने सत्याग्रह को विरोध की तकनीक नहीं, बल्कि आत्मबल की साधना बनाया। लाठी सामने थी, लेकिन हाथ में सत्य था। जेल सामने थी, लेकिन मन में स्वतंत्रता थी। कष्ट सामने था, लेकिन लक्ष्य व्यक्तिगत नहीं, राष्ट्रीय था।

भगत सिंह और उनके साथियों के सामने अपना जीवन था, लेकिन उन्होंने अपने जीवन को राष्ट्र के भविष्य के लिए समर्पित कर दिया। हजारों स्त्रीपुरुष जेल गए। असंख्य परिवारों ने कष्ट सहा। कई लोगों ने अपनी संपत्ति गंवाई।कई अपने प्राणों से हाथ धो बैठे। इसलिए स्वतंत्रता आंदोलन का मूल प्रश्न केवल यह नहीं था—'मुझे क्या मिलेगा?' उसका प्रश्न था—'भारत को क्या मिलेगा?'आज के आंदोलनों के सामने यही सबसे बड़ा नैतिक प्रश्न है।

आज का आंदोलन–अधिकार से आगे राष्ट्रहित तक पहुंचे

आज का युवा कहता है—पेपर लीक बंद करो।भर्ती प्रक्रिया पारदर्शी बनाओ। रोजगार दो। भ्रष्टाचार रोकिए। इन मांगों में कोई अस्वाभाविकता नहीं। लेकिन किसी भी आंदोलन की परिपक्वता तब शुरू होती है, जब वह अपनी तत्काल समस्या से आगे देखना शुरू करता है। आज नौकरी चाहिए। कल उस नौकरी की व्यवस्था कौन बनाएगा? आज पेपर लीक रोकना है। कल परीक्षा प्रणाली को ऐसा कौन बनाएगा कि फिर किसी और पीढ़ी को यह लड़ाई न लड़नी पड़े? यहीं से आंदोलनशिकायतसे निकलकरसुधारबनता है।और सुधार से आगे बढ़कर राष्ट्र निर्माण।बनता है।

आंबेडकर: तस्वीर नहीं, विचार

आज हमारे सार्वजनिक जीवन की एक बड़ी विडंबना यह है कि हम महापुरुषों को बहुत आसानी से प्रतीकों में बदल देते हैं। आंबेडकर की तस्वीर हाथ में है। आंबेडकर की प्रतिमा पर फूल हैं। आंबेडकर के नाम पर स्मारक हैं। लेकिन क्या आंबेडकर हमारे व्यवहार में भी हैं?

डॉ. भीमराव आंबेडकर ने संविधान को केवल सत्ता चलाने की किताब

यह आक्रोश अचानक पैदा नहीं हुआ

आज का युवा बेचैन है। उसके हाथ में मोबाइल है, लेकिन भविष्य की तस्वीर धुंधली है। उसके पास डिग्री है, लेकिन नौकरी निश्चित नहीं। उसके पास सूचना है, लेकिन अवसर सीमित हैं। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हुए किसी युवा ने अपने जीवन के कई वर्ष लगा दिए।

परिवार ने अपनी बचत लगाई। माता-पिता ने उम्मीदें लगाईं। और यदि परीक्षा से पहले ही प्रश्नपत्र बाजार में पहुंच जाए, तो केवल एक परीक्षा नहीं टूटती–एक परिवार का भरोसा टूटता है।

एक युवा के भीतर यह प्रश्न जन्म लेता है– 'क्या मेरी मेहनत का कोई मूल्य है?' इस प्रश्न को केवल राजनीतिक नारा समझना भूल होगी। यह हमारे समय का सामाजिक प्रश्न है। इसलिए युवाओं का आक्रोश सुनना जरूरी है। लेकिन आक्रोश को सुनना और आक्रोश के हर रूप को स्वीकार कर लेना–दो अलग बातें हैं। यहीं लोकतंत्र की असली परीक्षा शुरू होती है।

गुस्सा गलत नहीं है। लेकिन गुस्से की भाषा गलत हो सकती है। सरकार की आलोचना कीजिए। प्रधानमंत्री की नीतियों पर सवाल कीजिए। मुख्यमंत्री से जवाब मांगिए। अधिकारी की जवाबदेही तय कीजिए। लेकिन किसी व्यक्ति की गरिमा को नष्ट करना लोकतांत्रिक साहस नहीं है। कठोर प्रश्न लोकतंत्र को मजबूत करते हैं; अपमान लोकतांत्रिक संवाद को कमजोर करता है।

नहीं माना। उनके लिए लोकतंत्र एक ऐसी व्यवस्था थी जिसमें नागरिकों के अधिकार सुरक्षित हों, संस्थाएं मजबूत हों, कानून सर्वोपरि हो और सत्ता जनता के प्रति जवाबदेह हो। 25 नवंबर 1949 को संविधान सभा में अपने ऐतिहासिक भाषण में उन्होंने लोकतंत्र के सामने आने वाले उन रास्तों से सावधान किया था, जोसंवैधानिक व्यवस्था को कमजोर कर सकते थे।

उनकी चिंता केवल सत्ता को लेकर नहीं थी।उन्हें चिंता थी कि कहीं लोकतंत्र व्यक्ति-पूजा, अराजकता और असंवैधानिक तरीकों का शिकार न हो जाए। लेकिन आंबेडकर को केवल 'प्रोटेस्ट के विरोधी' के रूप में प्रस्तुत करना भी उतना ही गलत होगा। उन्होंने स्वयं अन्याय के खिलाफ संघर्ष किया था। उन्होंने सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठाई।उन्होंने अधिकारों के लिए आंदोलन किए।इसलिए उनका संदेश था—संघर्ष करो, लेकिन संघर्ष को संविधान और लोकतंत्र की आत्मा से अलग मत करो।

सरकार भी कटघरे से बाहर नहीं

लोकतंत्र में केवल नागरिकों से मर्यादा की अपेक्षा करना भी अन्याय है। सत्ता के पास अधिकार अधिक हैं, इसलिए उसकी जवाबदेही भी अधिक है। अगर किसी परीक्षा में अनियमितता हुई है, तो युवा को जवाब चाहिए। अगर पेपर लीक हुआ है, तो दोषियों तक पहुंचना सरकार की जिम्मेदारी है। अगर लाखों युवाओं का भविष्य प्रभावित हुआ है, तो केवल बयान पर्याप्त नहीं है।

मोहन भागवत ने युवाओं के बीच जाकर संवाद का रास्ता चुना है

संघ जैसी संस्था, जिसकी कार्यशैली सामान्यतः दीर्घकालिक सामाजिक निर्माण और संगठन विस्तार के इर्द-गिर्द रही है, यदि नई पीढ़ी से सीधे संवाद कर रही है तो इसका अर्थ है कि भारत की अगली पीढ़ी उसके चिंतन के केंद्र में आ चुकी है।यह केवल संघ की चिंता नहीं है। यह हर राजनीतिक और सामाजिक संगठन की चिंता है। क्योंकि जिस पीढ़ी का जन्म स्मार्टफोन के साथ हुआ है, वह अब वोट देने की उम्र में है।और आने वाले वर्षों में यही पीढ़ी चुनावों का बड़ा हिस्सा तय करेगी। लेकिन Gen-Z को केवल मतदाता मानना शायद सबसे बड़ी भूल होगी। यह पीढ़ी सूचना की उपभोक्ता ही नहीं, सूचना की निर्माता भी है। यह टिप्पणी करती है। वीडियो बनाती है। सरकार से सवाल पूछती है। राजनीतिक नेताओं की तुलना करती है। और कुछ ही घंटों में किसी मुद्दे को राष्ट्रीय बहस बना सकती है।यानी लोकतंत्र का नया सार्वजनिक मंच केवल संसद या सड़क नहीं रहा।अब मोबाइल स्क्रीन भी लोकतंत्र का एक महत्वपूर्ण मैदान है।

Gen-Z को केवल युवा कह देना पर्याप्त नहीं। यह ऐसी पीढ़ी है जिसने एक साथ दो भारत देखे हैं। एक ओर डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप, PI, AI, अंतरिक्ष मिशन और वैश्विक अवसरों का भारत।दूसरी ओर बेरोजगारी, प्रतियोगी परीक्षाओं की अनिश्चितता, पेपर लीक, बढ़ती प्रतिस्पर्धा और भविष्य की चिंता।इस पीढ़ी की सबसे बड़ी बेचैनी शायद यही विरोधाभास है। उसे अवसर दिखाई देते हैं।लेकिन अवसर तक पहुंच की असमानता भी दिखाई देती है।उसे दुनिया मुट्ठी में दिखाई देती है।लेकिन अपना भविष्य कई बार धुंधला दिखाई देता है। इसलिए Gen-Z के राजनीतिक सवाल पारंपरिक नहीं हैं।वह पूछती है—मेरी नौकरी कहां है? मेरी शिक्षा का स्तर क्यों गिर रहा है? परीक्षाएं सुरक्षित क्यों नहीं हैं?मेरी डिग्री की कीमत क्या है?AI मेरी नौकरी लेगा या नए अवसर पैदा करेगा?क्या मैं अपने शहर में रहकर अच्छा जीवन जी सकता हूं?और सबसे महत्वपूर्ण—मेरे भविष्य की योजना कौन बना रहा है?यही प्रश्न आने वाली राजनीति का केंद्र बन सकता है।

व्यवस्था को परिणाम देना होगा।क्योंकि जिस दिन नागरिक को यह महसूस होने लगे कि उसकी मेहनत से ज्यादा महत्वपूर्ण किसी दलाल की पहुंच है, उस दिन केवल एक परीक्षा व्यवस्था नहीं टूटती—लोकतंत्र पर भरोसा टूटता है।और जब भरोसा टूटता है तो सड़कें सवाल पूछती हैं।इसलिए सरकार को भी आंबेडकर को केवल स्मारकों में नहीं, सुशासन में खोजना होगा।

गुस्सा गलत नहीं है। लेकिन गुस्से की भाषा गलत हो सकती है। सरकार की आलोचना कीजिए। प्रधानमंत्री की नीतियों पर सवाल कीजिए। मुख्यमंत्री से जवाब मांगिए। अधिकारी की जवाबदेही तय कीजिए। लेकिन किसी व्यक्ति की गरिमा को नष्ट करना लोकतांत्रिक साहस नहीं है। कठोर प्रश्न लोकतंत्र को मजबूत करते हैं; अपमान लोकतांत्रिक संवाद को कमजोर करता है।

हमें आक्रोश में विवेक भी चाहिए

भारत को आंदोलन चाहिए।क्योंकि अन्याय के सामने मौन रहना भी एक प्रकार

विपक्ष के नेता राहुल गांधी भी पिछले कुछ समय से युवा मुद्दों को सीधे युवाओं की भाषा और डिजिटल माध्यमों में उठाने की कोशिश कर रहे हैं।

का अन्याय है।लेकिन भारत को अराजकता नहीं चाहिए। हमें ऐसा आंदोलन चाहिए जिसमें—आक्रोश हो, लेकिन हिंसा नहीं। साहस हो, लेकिन अहंकार नहीं।असहमति हो, लेकिन अपमान नहीं। प्रश्न हो, लेकिन पूर्वाग्रह नहीं। अधिकार की मांग हो, लेकिन कर्तव्य का विस्मरण नहीं।और सबसे बढ़कर—व्यक्ति से बड़ा विचार हो।यही हमारी सभ्यता की शक्ति रही है।

यह कहना कि अब फैसले संसद में नहीं, सड़क पर होंगे—लोकतंत्र की स्वस्थ कल्पना नहीं है। लेकिन यह कहना भी गलत होगा कि सड़क पर उठी हर आवाज लोकतंत्र विरोधी है। सड़क नागरिक की आवाज है।संसद उस आवाज को कानून में बदलने की संस्था है। न्यायपालिका अधिकारों की संवैधानिक रक्षा करती है। मीडिया सवालों को समाज तक पहुंचाता है। और नागरिक इस पूरी व्यवस्था का केंद्र है। इसलिए लोकतंत्र का रास्ता सड़क बनाम संसद। नहीं है—बल्कि—सड़क से संसद तक संवाद होना चाहिए ।जनता सवाल पूछे। संसद जवाब दे।सरकार कार्रवाई करे। संस्थाएं निगरानी करें।और नागरिक परिणाम देखे। यही लोकतांत्रिक चक्र है।

यहीं भारतीय राजनीति का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष सामने आता है। यदि मोहन भागवत ने युवाओं के बीच जाकर संवाद का रास्ता चुना है, तो विपक्ष के नेता राहुल गांधी भी पिछले कुछ समय से युवा मुद्दों को सीधे युवाओं की भाषा और डिजिटल माध्यमों में उठाने की कोशिश कर रहे हैं। पेपर लीक और छात्र आंदोलनों के दौरान राहुल गांधी ने खुले तौर पर छात्रों का समर्थन किया और शिक्षा व्यवस्था को लेकर सरकार पर सवाल उठाए।

अगस्त के पहले सप्ताह में उन्होंने Gen-Z के सवालों का जवाब Instagram के माध्यम से देते हुए यह भी कहा कि शिक्षा व्यवस्था को सुधारने की जिम्मेदारी केवल केंद्र की नहीं, बल्कि हर सरकार की है—

युवा की नाराजगी को समर्थन में बदलना आसान नहीं। क्योंकि युवा पूछेगा—आप सत्ता में आए तो करेंगे क्या? यही वह सवाल है जिसका जवाब विपक्ष को भी देना होगा।

कांग्रेस सरकार की भी। यह बात राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। क्योंकि राहुल गांधी का यह तरीका केवल 'युवाओं के लिए भाषण' देने का नहीं है। वह युवाओं के सवालों को राजनीतिक मुद्दे में बदलने की कोशिश कर रहे हैं। राहुल गांधी के हालिया युवा संवाद में एक दिलचस्प बदलाव दिखाई देता है। वे युवाओं को केवल यह नहीं कहते कि कांग्रेस के साथ आइए। वे उनके सवालों को राजनीतिक विमर्श का हिस्सा बनाने की कोशिश करते हैं। CBSE विवाद में छात्रों से बातचीत के दौरान उन्होंने उन छात्रों को सामने रखा जिन्होंने व्यवस्था पर सवाल उठाए थे। लेकिन यहां राहुल गांधी के सामने भी वही चुनौती है जो बीजेपी और संघ के सामने है। युवा की नाराजगी को समर्थन में बदलना आसान नहीं। क्योंकि युवा पूछेगा—आप सत्ता में आए तो करेंगे क्या? यही वह सवाल है जिसका जवाब विपक्ष को भी देना होगा।

सवाल हम सबके सामने है- हम किस तरह का भारत अगली पीढ़ी को देना चाहते हैं? ऐसा भारत जहां हर सवाल का जवाब सड़क पर भीड़ दे? या ऐसा भारत जहां हर सवाल का जवाब संस्थाएं दें? ऐसा भारत जहां सत्ता प्रश्न से डरती हो? या ऐसा भारत जहां सत्ता प्रश्न को लोकतंत्र की शक्ति माने? ऐसा भारत जहां युवा केवल नौकरी मांगे? या ऐसा भारत जहां युवा ऐसी व्यवस्था बनाने की मांग करे जिसमें उसके बच्चों को भी न्याय मिले?

शायद हमें इन विकल्पों में से किसी एक को चुनने की आवश्यकता नहीं।हमें एक तीसरा रास्ता बनाना होगा।जहां युवा का आक्रोश भी सुरक्षित रहे और लोकतंत्र की मर्यादा भी। जहां सरकार की शक्ति भी बनी रहे और उसकी जवाबदेही भी। जहां सड़क की आवाज भी सुनी जाए और संसद की गरिमा भी। जहां आंबेडकर की तस्वीर दीवार पर ही नहीं, शासन और नागरिक आचरण में भी दिखाई दे। क्योंकि संविधान केवल कागज पर लिखे शब्दों का संग्रह नहीं है।संविधान हमारे सामूहिक आचरण की परीक्षा है।और लोकतंत्र केवल वोट देने का अधिकार नहीं। लोकतंत्र असहमति को सहने की संस्कृति है।

आज भारत की राजनीति के तीनों प्रमुख विमर्शों के सामने एक समान चुनौती है।संघ के सामने प्रश्न है—क्या वह अपनी सांस्कृतिक और राष्ट्रीय विचारधारा को नई पीढ़ी की भाषा में समझा सकता है? बीजेपी के सामने प्रश्न है—क्या वह शासन के परिणामों को युवा आकांक्षाओं के साथ जोड़ सकती है? और कांग्रेस के सामने प्रश्न है—क्या वह युवाओं की नाराजगी को केवल सत्ता विरोध में बदलने के बजाय विश्वसनीय वैकल्पिक शासन मॉडल में बदल सकती है? इन तीनों प्रश्नों का उत्तर आने वाले वर्षों की राजनीति को प्रभावित करेगा।

भारत को न शोर चाहिए, न केवल शासन। भारत को चाहिए—संवाद। न्याय। जवाबदेही। और ऐसा लोकतंत्र, जिसमें अगली पीढ़ी अपने भविष्य पर भरोसा कर सके।

शायद यही वह भारत है, जिसके लिए हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने संघर्ष किया था। शायद यही वह लोकतंत्र है, जिसकी कल्पना संविधान निर्माताओं ने की थी।और शायद यही वह मर्यादा है, जिसे बचाए रखना आज हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है।

किले दरक रहें या मतदाता विकल्प तलाश रहा ?

■ नरेन्द्र पाण्डेय

पुरानी कहावत है – राजनीति में कोई किला स्थायी नहीं होता।किले केवल तब तक किले होते हैं, जब तक मतदाता उन्हें किला मानता है। जिस दिन मतदाता अपने मन में किसी सीट, किसी नेता या किसी दल को अजेय मानना बंद कर देता है, उसी दिन सबसे मजबूत दिखाई देने वाली राजनीतिक दीवार में पहली दरार पड़ जाती है।बिहार का बांकीपुर और मध्य प्रदेश का दतिया—दोनों चुनाव परिणामों को इसी नजरिए से देखने की जरूरत है। इन दोनों सीटों की राजनीतिक परिस्थितियां अलग हैं। सामाजिक समीकरण अलग हैं। उम्मीदवार अलग हैं और चुनावी मुद्दे भी अलग हैं। फिर भी दोनों नतीजे भारतीय राजनीति के बदलते स्वभाव की ओर एक महत्वपूर्ण संकेत करते हैं।

क्या अब मतदाता केवल सत्ता बदलने के लिए वोट नहीं कर रहा। वह विकल्प तलाश रहा है।कहीं वह पारंपरिक विपक्ष को मौका दे रहा है और कहीं वह स्थापित दलों के बीच से निकलकर किसी नए राजनीतिक प्रयोग को चुन रहा है।यही आने वाली राजनीति का सबसे महत्वपूर्ण संकेत हो सकता है।

बांकीपुर का संदेश–क्या बीजेपी का 'अजेय' भी अब चुनौती के घेरे में है?

पटना का बांकीपुर लंबे समय से बीजेपी के मजबूत राजनीतिक आधार के रूप में देखा जाता रहा है।ऐसी सीट जहां पार्टी का संगठन, शहरी मतदाता और वर्षों से बना राजनीतिक प्रभाव उसे स्वाभाविक बढ़त देता रहा।लेकिन यदि आपके दिए उपचुनाव के आंकड़े आधिकारिक परिणामों से पुष्ट होते हैं और जन सुराज के प्रशांत किशोर ने बीजेपी उम्मीदवार को 19,324 मतों से पराजित किया है, तो यह केवल एक सीट का परिणाम नहीं होगा। यह एक राजनीतिक मनोविज्ञान के टूटने का संकेत होगा—'बीजेपी को यहां हराया नहीं जा सकता।' भारतीय चुनावी राजनीति में यह धारणा किसी भी पार्टी के लिए सबसे बड़ा लाभ होती है।लेकिन यही धारणा समय के साथ सबसे बड़ी कमजोरी भी बन सकती है।क्योंकि जब पार्टी स्वयं को मजबूत समझती है, तब मतदाता अक्सर उसे जवाब देने के लिए विपक्ष को चुनता है।और जब मतदाता को विपक्ष भी विश्वसनीय नहीं लगता, तब तीसरे विकल्प की तलाश शुरू होती है।बांकीपुर की सबसे बड़ी राजनीतिक कहानी शायद यही है।क्या बिहार में मतदाता बीजेपी बनाम आरजेडी के पारंपरिक द्वंद्व से बाहर निकलने की कोशिश कर रहा है?

प्रशांत किशोर की जीत से ज्यादा महत्वपूर्ण है उनकी चुनौती

प्रशांत किशोर के लिए यह सफलता निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है। एक राजनीतिक रणनीतिकार से स्वयं राजनीतिक खिलाड़ी बनने का उनका प्रयोग अब पहली बड़ी

चुनावी परीक्षा से गुजर चुका है।

पदयात्रा, स्थानीय नेटवर्क, युवाओं से संवाद और माइक्रो-लेवल संगठन—इन सबका लाभ उन्हें मिला होगा।लेकिन किसी भी नए राजनीतिक दल की पहली जीत से ज्यादा महत्वपूर्ण उसकी दूसरी परीक्षा होती है। क्या वह जीत को संगठन में बदल सकता है? क्या वह एक सीट से आगे बढ़ सकता है? क्या वह बिहार के अलग-अलग सामाजिक समूहों को एक राजनीतिक मंच पर ला सकता है?क्या वह केवल बीजेपी विरोधी मतदाता का विकल्प है या उसका अपना स्थायी मतदाता आधार बन सकता है?और सबसे महत्वपूर्ण—क्या जन सुराज के पास केवल सत्ता की आलोचना है, या शासन का स्पष्ट मॉडल भी है?यहीं प्रशांत किशोर की असली राजनीतिक परीक्षा शुरू होती है।क्योंकि भारतीय राजनीति में 'विकल्प' बनना और 'विश्वसनीय विकल्प' बनना दो अलग-अलग बातें हैं।

दतिया—एक अलग कहानी, लेकिन संदेश समान

मध्य प्रदेश की दतिया सीट को बांकीपुर की तरह सीधे बीजेपी का वर्तमान अजेय किला कहना उचित नहीं होगा। 2023 में भी कांग्रेस ने यहां बीजेपी के दिग्गज नेता नरोत्तम मिश्रा को हराया था। इसलिए दतिया का परिणाम बीजेपी के किसी पुराने अभेद्य गढ़ के टूटने की कहानी नहीं है।लेकिन इसकी राजनीतिक अहमियत फिर भी कम नहीं है।कांग्रेस के घनश्याम सिंह की जीत यह बताती है कि बीजेपी के सामने विपक्ष के लिए कुछ राजनीतिक जगह अभी भी मौजूद है। यहां मतदाता ने तीसरे विकल्प की तलाश नहीं की। उसने उपलब्ध पारंपरिक विकल्प में ही सत्ता परिवर्तन का रास्ता देखा।यही बांकीपुर और दतिया के बीच सबसे बड़ा अंतर है।बांकीपुर का संदेश—नया विकल्प।दतिया का संदेश—पुराना विकल्प अभी खत्म नहीं हुआ।और यही अंतर आने वाले वर्षों की भारतीय राजनीति को समझने में मदद कर सकता है।

क्या कांग्रेस वापसी कर रही है?

दतिया जैसे परिणाम कांग्रेस के लिए उत्साह जरूर पैदा कर सकते हैं। लेकिन उपचुनावों को राष्ट्रीय राजनीतिक पुनर्जागरण का प्रमाण मान लेना जल्दबाजी होगी।कांग्रेस के सामने आज सबसे बड़ा प्रश्न यह नहीं है कि वह बीजेपी को हरा सकती है या नहीं।वह प्रश्न तो उसने कई राज्यों और सीटों पर समय-समय पर साबित किया है।बड़ा प्रश्न यह है—क्या वह लगातार जीतने वाली राजनीतिक मशीनरी खड़ी कर सकती है?क्या वह बूथ स्तर पर संगठन मजबूत कर सकती है?क्या वह स्थानीय नेतृत्व को स्वतंत्र राजनीतिक पहचान दे सकती है?क्या वह युवाओं के बीच नया राजनीतिक नैरेटिव बना सकती है?और क्या वह केवल बीजेपी विरोधी मतदाताओं को एकत्रित करने के बजाय अपने पक्ष में सकारात्मक जनसमर्थन तैयार कर सकती है?अगर इन प्रश्नों के उत्तर कांग्रेस खोज लेती है, तो दतिया जैसे परिणाम आगे चलकर बड़े राजनीतिक संकेत बन सकते हैं। अन्यथा उपचुनाव की जीत उपचुनाव तक ही सीमित रह जाएगी।

मतदाता की उदासीनता है बीजेपी के लिए खतरा

किसी भी राजनीतिक दल के लिए चुनाव हारना उतना खतरनाक नहीं होता जितना उसका पारंपरिक मतदाता उससेभावनात्मक रूप से दूर होना।हार की समीक्षा की जा सकती है। लेकिन यदि मतदाता के भीतर यह भावना पैदा हो जाए कि—'इससे क्या फर्क पड़ेगा?' तो समस्या गहरी है।बीजेपी के सामने यही चुनौती है। वर्षों की चुनावी सफलता ने पार्टी को संगठनात्मक आत्मविश्वास दिया है।लेकिन अब वही आत्मविश्वास कहीं-कहीं मतदाता के मन में यह सवाल भी पैदा कर सकता है कि क्या पार्टी स्थानीय मुद्दों को उतनी गंभीरता से सुन रही है, जितनी उसे सुननी चाहिए?महंगाई, रोजगार, शिक्षा, स्थानीय विकास, प्रशासनिक संवेदनशीलता, उम्मीदवारों की स्वीकार्यता और सत्ता का व्यवहार—ये सभी मुद्दे धीरे-धीरे राष्ट्रीय राजनीति के बड़े नैरेटिव से अधिक महत्वपूर्ण हो सकते हैं।2024 के बाद की राजनीति में मतदाता शायद केवल %कौन प्रधानमंत्री बनेगा% नहीं पूछेगा। वह यह भी पूछेगा—%मेरे शहर और मेरे घर के आसपास क्या बदला?%यही बदलाव राजनीतिक दलों के लिए महत्वपूर्ण है।

आने वाले समय की राजनीति–'ब्रांड' से 'प्रदर्शन' की ओर?

भारतीय राजनीति पिछले दशक में व्यक्तित्व-केंद्रित हुई है।नेता का चेहरा चुनाव का सबसे बड़ा ब्रांड बन गया।सोशल मीडिया ने इस प्रक्रिया को और तेज किया।लेकिन अब अगला चरण शायद प्रदर्शन-केंद्रित राजनीतिका हो सकता है। मतदाता कह सकता है—चेहरा ठीक है, लेकिन मेरे लिए किया क्या?पार्टी बड़ी है, लेकिन मेरे क्षेत्र में बदला क्या?भाषण प्रभावी है, लेकिन रोजगार कहां है?योजना अच्छी है, लेकिन उसका लाभ मेरे घर तक कब पहुंचेगा?यही कारण है कि आने वाले वर्षों में स्थानीय चुनाव और उपचुनाव राजनीतिक प्रयोगशाला की भूमिका निभा सकते हैं।यहां राष्ट्रीय नारों की तुलना में स्थानीय प्रदर्शन अधिक महत्वपूर्ण हो सकता है।

क्या वास्तव में तीसरा विकल्प संभव है?

भारतीय राजनीति में तीसरे विकल्प की चर्चा नई नहीं है।लेकिन तीसरे विकल्प की सबसे बड़ी समस्या रही है—वह अक्सर चुनाव जीतने से पहले ही गठबंधन में बदल जाता है और सत्ता में आने के बाद अपनी वैचारिक पहचान खो देता है।प्रशांत किशोर और जन सुराज के सामने भी यही चुनौती होगी।यदि वह बीजेपी और आरजेडी दोनों से दूरी की राजनीति करते हैं, तो यह आकर्षक है।लेकिन राजनीति में खाली जगह लंबे

हार पर मंथन कर रही पार्टी...

समय तक खाली नहीं रहती। यदि जन सुराज उस जगह को भरना चाहता है, तो उसे तीन चीजें साबित करनी होंगी—संगठन। विचार। शासन क्षमता। इनमें से एक भी कमजोर हुआ तो तीसरा विकल्प केवल चुनावी प्रयोग बनकर रह जाएगा।

2029 की राजनीति अभी से तैयार हो रही है?

आज के उपचुनावों को सीधे 2029 के लोकसभा चुनाव से जोड़ना अतिशयोक्ति होगी। लेकिन राजनीति में बड़े बदलाव अक्सर बड़े चुनावों से पहले छोटे-छोटे संकेतों में दिखाई देते हैं। उपचुनावों में नए उम्मीदवारों की सफलता। स्थानीय स्तर पर सत्ता विरोधी मतदान। युवा मतदाता का नए चेहरों की ओर आकर्षण। पारंपरिक विपक्ष की कुछ सीटों पर वापसी। और स्थापित दलों के पारंपरिक वोट बैंक में दरार।ये सभी संकेत एक साथ मिलकर बताते हैं कि भारतीय राजनीति स्थिर नहीं है। मतदाता का मन लगातार गतिशील है। इसलिए 2029 की राजनीति का असली मुकाबला केवल बीजेपी और कांग्रेस के बीच नहीं होगा।उसमें यह प्रश्न भी महत्वपूर्ण होगा कि—क्या कोई तीसरी राजनीतिक शक्ति क्षेत्रीय सीमाओं से बाहर निकलकर राष्ट्रीय विमर्श को प्रभावित कर पाएगी?

बीजेपी के सामने तीन रास्ते

बांकीपुर और दतिया जैसे परिणाम बीजेपी को तीन विकल्प देते हैं।पहला—इन्हें सामान्य उपचुनावी उतार-चढ़ाव मानकर आगे बढ़ जाना। दूसरा—संगठनात्मक स्तर पर समीक्षा करना।और तीसरा—मतदाता के बदलते मनोविज्ञान को गंभीरता से समझना। तीसरा रास्ता सबसे कठिन है। क्योंकि इसके लिए पार्टी को स्वयं से असहज प्रश्न पूछने होंगे।क्या उम्मीदवार चयन में स्थानीय स्वीकार्यता पर्याप्त है?क्या संगठन और जनता के बीच संवाद उतना मजबूत है?क्या सत्ता में रहते हुए जनता की छोटी समस्याएं राजनीतिक विमर्श तक पहुंच रही हैं?क्या युवा मतदाता पार्टी को अपना भविष्य मानता है? और सबसे बड़ा प्रश्न—क्या बीजेपी का पारंपरिक सामाजिक गठबंधन आने वाली पीढ़ी के साथ भी उतना ही प्रभावी रहेगा? यदि पार्टी इन प्रश्नों पर समय रहते विचार करती है, तो उपचुनाव उसके लिए खतरे के बजाय चेतावनी बन सकते हैं।

और शायद इस पूरी कहानी का सबसे महत्वपूर्ण पात्र न बीजेपी है, न कांग्रेस और न जन सुराज। सबसे महत्वपूर्ण पात्र है—मतदाता। क्योंकि भारतीय मतदाता ने बार-बार साबित किया है कि वह किसी राजनीतिक दल का स्थायी अनुयायी नहीं है। वह सत्ता को अवसर देता है। फिर उसे परखता है। फिर सवाल करता है। और आवश्यकता पड़ने पर उसे बदल भी देता है। कभी वहबदलाव कांग्रेस के पक्ष में करता है। कभी बीजेपी के पक्ष में। कभी क्षेत्रीय दलों के पक्ष में। और अब यदि जन सुराज जैसे नए प्रयोगों को अवसर देता है, तो यह भारतीय लोकतंत्र की एक और परत है। इसलिए बांकीपुर और दतिया को केवल हार और जीत के चश्मे से देखना बहुत छोटा विश्लेषण होगा।इन दोनों परिणामों का बड़ा संदेश है—भारतीय राजनीति में मतदाता का मन फिर से खुला है।और जब मतदाता का मन खुलता है, तब राजनीतिक दलों के सामने संभावनाएं भी बढ़ती हैं और खतरे भी।

आने वाला चुनाव 'कौन?' से ज्यादा 'क्यों?' पूछेगा

भारतीय राजनीति का अगला चरण शायद इसी प्रश्न से तय होगा—आपको वोट क्यों दें?सिर्फ इसलिए कि सामने वाला खराब है?शायद नहीं।सिर्फ इसलिए कि आपकी पार्टी बड़ी है?शायद नहीं।

सिर्फ इसलिए कि आपका नेता लोकप्रिय है?शायद नहीं।मतदाता धीरे-धीरे यह पूछ सकता है—मेरे जीवन में आपके आने से क्या बदलेगा?और यही प्रश्न लोकतंत्र को नई दिशा दे सकता है।

बांकीपुर ने यदि तीसरे विकल्प को मौका दिया है, तो यह स्थापित दलों के लिए चेतावनी है।दतिया ने यदि कांग्रेस को फिर अवसर दिया है, तो यह बीजेपी के लिए चेतावनी है।लेकिन इन दोनों से भी बड़ी चेतावनी सभी राजनीतिक दलों के लिए है—मतदाता को कभी स्थायी मत समझिए।आज का समर्थक कल प्रश्नकर्ता हो सकता है। आज का किला कल चुनौती बन सकता है।आज का तीसरा विकल्प कल सत्ता बन सकता है। और आज की छोटी-सी उपचुनावी कहानी, कल की बड़ी राजनीतिक पटकथा का पहला अध्याय भी हो सकती है।यही लोकतंत्र की सबसे बड़ी खूबसूरती है—यहां सत्ता किसी की विरासत नहीं।सत्ता जनता की है। राजनीतिक दल केवल उसके प्रतिनिधि हैं। और जब जनता अपनी प्राथमिकताएं बदलती है, तो राजनीति को भी बदलना पड़ता है।

खनिज प्रदेश से निवेश प्रदेश तक

ईज ऑफ डुईंग बिजनेस और औद्योगिक विविधीकरण से बदलती छत्तीसगढ़ की तस्वीर

भारत आज दुनिया की सबसे तेजी से उभरती अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है। विकसित भारत 2047 के लक्ष्य की ओर बढ़ते देश में राज्यों की भूमिका लगातार महत्वपूर्ण होती जा रही है। निवेश, उद्योग, रोजगार, तकनीक और अधोसंरचना अब किसी भी राज्य की आर्थिक प्रगति के प्रमुख आधार हैं। इसी बदलते आर्थिक परिदृश्य में छत्तीसगढ़ भी अपनी पारंपरिक पहचान से आगे बढ़कर निवेश और औद्योगिक विकास के नए केंद्र के रूप में उभरने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

खनिज संपदा और इस्पात उद्योग के लिए प्रसिद्ध छत्तीसगढ़ के पास लौह अयस्क, कोयला, बॉक्साइट, चूना पत्थर और डोलोमाइट जैसे प्रचुर प्राकृतिक संसाधन हैं। भिलाई का इस्पात उद्योग और कोरबा का ऊर्जा क्षेत्र राज्य की औद्योगिक पहचान के महत्वपूर्ण स्तंभ रहे हैं। लेकिन अब राज्य की आर्थिक सोच केवल खनिज निकालने और कच्चा माल उपलब्ध कराने तक सीमित नहीं है। जोर इस बात पर है कि उपलब्ध संसाधनों का मूल्य संवर्धन हो, राज्य में ही विनिर्माण बढ़े और स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा हों। यही बदलाव छत्तीसगढ़ की नई औद्योगिक कहानी का आधार बन रहा है।

खनिज प्रदेश से विविध अर्थव्यवस्था की ओर

बदलती वैश्विक अर्थव्यवस्था में किसी भी राज्य की मजबूती केवल प्राकृतिक संसाधनों से तय नहीं होती। निवेशक अब यह भी देखते हैं कि वहां प्रशासन कितना पारदर्शी है, अधोसंरचना कैसी है, अनुमति लेने में कितना समय लगता है और उद्योगों को सरकारी स्तर पर कितना सहयोग मिलता है।

छत्तीसगढ़ इसी दृष्टि से अपने औद्योगिक आधार को विविध बनाने पर जोर दे रहा है। फूड प्रोसेसिंग, कृषि आधारित उद्योग, टेक्सटाइल एवं गारमेंट, फार्मास्यूटिकल्स, आईटी एवं इलेक्ट्रॉनिक्स, डेटा सेंटर, लॉजिस्टिक्स, वेयरहाउसिंग, नवीकरणीय ऊर्जा, पर्यटन और आतिथ्य जैसे क्षेत्र भविष्य में राज्य की अर्थव्यवस्था को नई दिशा दे सकते हैं।

इसका सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि औद्योगिक विकास कुछ बड़े क्षेत्रों तक सीमित न रहकर राज्य के अलग-अलग हिस्सों में आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देगा।

ईज ऑफ डुईंग बिजनेस- निवेश का नया आधार

आज निवेशक के लिए केवल जमीन और संसाधन पर्याप्त नहीं हैं। वह एक ऐसे प्रशासनिक वातावरण की तलाश करता है, जहां नियम स्पष्ट हों, प्रक्रियाएं सरल हों और निर्णय समय पर लिए जाएं।

ईज ऑफ डुईंग बिजनेस का मूल उद्देश्य यही है—व्यवसाय शुरू करने, संचालित करने और उसका विस्तार करने की प्रक्रिया को सरल, पारदर्शी और समयबद्ध बनाना।

छत्तीसगढ़ में निवेश सुविधा और प्रशासनिक प्रक्रियाओं को डिजिटल बनाने पर जोर दिया जा रहा है। ऑनलाइन आवेदन, डिजिटल भुगतान, आवेदन की स्थिति की निगरानी और शिकायत निवारण जैसी व्यवस्थाएं निवेशकों के लिए प्रक्रिया को अधिक सुगम बना सकती हैं।

इसका महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि आज वैश्विक निवेश के लिए राज्यों के बीच प्रतिस्पर्धा है। निवेशक वहां जाना चाहता है जहां उसे समय की बचत, प्रक्रियाओं में स्पष्टता और प्रशासनिक भरोसा मिले।

नई औद्योगिक नीति और निवेश के अवसर

छत्तीसगढ़ की औद्योगिक रणनीति में बड़े उद्योगों के साथ-साथ सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों यानी स्स्स्ध को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। किसी भी मजबूत औद्योगिक

अर्थव्यवस्था के लिए स्वस्थ्य क्षेत्र आवश्यक है, क्योंकि यही क्षेत्र बड़े उद्योगों के लिए सप्लाई चेन, सेवाओं और सहायक उत्पादन का आधार तैयार करता है।

राज्य की औद्योगिक नीति के तहत पूंजी निवेश पर प्रोत्साहन, ब्याज अनुदान, बिजली शुल्क में राहत, स्टाम्प शुल्क में छूट और भूमि आवंटन को सरल बनाने जैसे प्रावधान निवेशकों के लिए आकर्षण पैदा कर सकते हैं।

महिला और युवा उद्यमियों के साथ-साथ अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग के उद्यमियों के लिए विशेष प्रोत्साहन का उद्देश्य औद्योगिक विकास को अधिक समावेशी बनाना है।

यदि बड़े उद्योगों के साथ स्थानीय स्वस्थ्य नेटवर्क मजबूत होता है, तो निवेश का लाभ केवल एक फैक्ट्री तक सीमित नहीं रहता। परिवहन, पैकेजिंग, मशीनरी, मरम्मत, लॉजिस्टिक्स, भोजन और अन्य सेवाओं में भी रोजगार और व्यवसाय के अवसर पैदा होते हैं।

मुख्यमंत्री साय के नेतृत्व में नई औद्योगिक सोच

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में राज्य सरकार ने उद्योग और निवेश को आर्थिक विकास का प्रमुख आधार माना है। सरकार का लक्ष्य छत्तीसगढ़ को केवल खनिज उत्पादन तक सीमित रखने के बजाय मूल्य संवर्धन, विनिर्माण और रोजगार सृजन का प्रमुख केंद्र बनाना है।

यह दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है। यदि राज्य के लौह अयस्क, कोयला, कृषि उपज और अन्य संसाधनों का अधिक से अधिक प्रसंस्करण राज्य के भीतर होता है, तो उत्पादन की पूरी श्रृंखला में आर्थिक गतिविधियां बढ़ेंगी।

निवेशकों के साथ संवाद और उनकी समस्याओं के त्वरित समाधान की व्यवस्था भी इस दिशा में महत्वपूर्ण है। उद्योग जगत और सरकार के बीच नियमित संवाद से नीतिगत समस्याओं को समझने और उनका समाधान करने में मदद मिलती है।

सिंगल विंडो- आसान हो रही उद्योग स्थापना

उद्योग स्थापित करने की प्रक्रिया में कई विभागों से अनुमति लेना लंबे समय तक निवेशकों के लिए चुनौती रहा है। सिंगल विंडो सिस्टम इस प्रक्रिया को सरल बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

एकीकृत डिजिटल व्यवस्था के माध्यम से उद्योग स्थापना के लिए आवेदन, विभिन्न विभागों से स्वीकृति, दस्तावेजों का सत्यापन, आवेदन की डिजिटल ट्रैकिंग और शिकायतों के समाधान जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा है।

इस व्यवस्था का सबसे बड़ा लाभ पारदर्शिता है। निवेशक अपने आवेदन की स्थिति ऑनलाइन देख सकता है और उसे हर चरण के लिए अलग-अलग कार्यालयों के चक्कर लगाने की आवश्यकता कम होती है। डिजिटल गवर्नेंस इसलिए केवल तकनीकी बदलाव नहीं, बल्कि निवेश के भरोसे को मजबूत करने का माध्यम है।

अधोसंरचना बनेगी औद्योगिक विकास की रीढ़

निवेश के लिए मजबूत अधोसंरचना अनिवार्य है। सड़क, रेल, बिजली, एयर कनेक्टिविटी, इंटरनेट, लॉजिस्टिक्स और वेयरहाउसिंग जैसी सुविधाएं उद्योगों की लागत और प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को सीधे प्रभावित करती हैं।

छत्तीसगढ़ देश के मध्य में स्थित है और यह भौगोलिक स्थिति उसे विभिन्न राष्ट्रीय बाजारों से जोड़ने का विशेष अवसर देती है। सड़क और रेल नेटवर्क का विस्तार तथा औद्योगिक क्षेत्रों और लॉजिस्टिक्स सुविधाओं का विकास राज्य को उत्पादन और माल परिवहन के महत्वपूर्ण केंद्र में बदल सकता है।

ऊर्जा क्षेत्र में भी छत्तीसगढ़ की मजबूत स्थिति उद्योगों के लिए महत्वपूर्ण आधार है। आने वाले समय में नवीकरणीय ऊर्जा और हरित औद्योगिक विकास पर बढ़ते जोर के बीच राज्य के लिए नई संभावनाएं खुल सकती हैं।

स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार की नई संभावनाएं

किसी भी निवेश की सबसे बड़ी सफलता तभी मानी जाती है जब उसका लाभ स्थानीय समाज तक पहुंचे। नए उद्योग प्रत्यक्ष रोजगार के साथ-साथ अप्रत्यक्ष रोजगार भी पैदा करते हैं। एक औद्योगिक परियोजना के आसपास परिवहन, होटल, रेस्टोरेंट, सुरक्षा, निर्माण, सर्विस सेंटर, लॉजिस्टिक्स और छोटे व्यापार जैसी गतिविधियां बढ़ती हैं। इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को गति मिलती है।

इसके लिए उद्योगों की जरूरत के अनुरूप कौशल विकास भी जरूरी है। तकनीकी शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण और स्थानीय युवाओं को उद्योगों की आवश्यकताओं से जोड़कर रोजगार की संभावनाओं को और मजबूत किया जा सकता है।

कृषि और वनोपज से उद्योग तक

छत्तीसगढ़ की औद्योगिक संभावनाएं केवल खनिज संसाधनों तक सीमित नहीं हैं। राज्य की कृषि और वन आधारित अर्थव्यवस्था भी उद्योगों के लिए बड़ा आधार बन सकती है। धान सहित विभिन्न कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण, पैकेजिंग और ब्रांडिंग से किसानों को बेहतर बाजार मिल सकता है। फूड प्रोसेसिंग उद्योग ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार पैदा कर सकता है। इसी तरह वनोपज आधारित प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन आदिवासी एवं वनवासी क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इससे एक नई आर्थिक श्रृंखला बन सकती है— किसान से उत्पाद, उत्पाद से उद्योग और उद्योग से बाजार।

पर्यटन और सेवा क्षेत्र की संभावनाएं

छत्तीसगढ़ की प्राकृतिक सुंदरता, जलप्रपात, वन क्षेत्र, जनजातीय संस्कृति, धार्मिक स्थल और ऐतिहासिक विरासत पर्यटन के लिए बड़ी संभावनाएं रखते हैं।पर्यटन को बेहतर सड़क संपर्क, डिजिटल प्रचार, होटल एवं होमस्टे, स्थानीय परिवहन और प्रशिक्षित मानव संसाधन से जोड़ा जाए तो यह रोजगार का महत्वपूर्ण क्षेत्र बन सकता है।

पर्यटन आधारित अर्थव्यवस्था की खासियत यह है कि इसमें स्थानीय छोटे कारोबार सीधे लाभान्वित होते हैं। स्थानीय भोजन, हस्तशिल्प, परिवहन, गाइड सेवा और होमस्टे जैसी गतिविधियां ग्रामीण क्षेत्रों में आय के नए स्रोत बन सकती हैं।

निवेश से विकसित भारत तक

विकसित भारत 2047 का लक्ष्य केवल केंद्र सरकार की योजनाओं से पूरा नहीं होगा। इसके लिए राज्यों को अपनी आर्थिक क्षमता का अधिकतम उपयोग करना होगा।

छत्तीसगढ़ के पास प्राकृतिक संसाधन, ऊर्जा क्षमता, कृषि आधार, युवा मानव संसाधन और देश के मध्य में स्थित होने का रणनीतिक लाभ है। यदि इन ताकतों को बेहतर अधोसंरचना, तकनीक, कौशल और निवेश-अनुकूल प्रशासन से जोड़ा जाता है, तो राज्य की आर्थिक क्षमता कई गुना बढ़ सकती है।

भविष्य में हरित ऊर्जा, इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण, डिजिटल उद्योग, एग्री-प्रोसेसिंग, फार्मास्यूटिकल्स, लॉजिस्टिक्स और पर्यटन जैसे क्षेत्रों में नई संभावनाएं खुल सकती हैं।

लेकिन सफलता केवल निवेश की राशि से नहीं मापी जाएगी। असली सवाल यह होगा कि निवेश कितना उत्पादन पैदा करता है, उत्पादन कितना रोजगार देता है और रोजगार स्थानीय परिवारों की आय में कितना बदलाव लाता है।

अधिकार मिले, लेकिन संसाधनों के बिना अधूरी रह गई गांवों की सरकार

रिपोर्ट के मुताबिक पंचायतों को पर्याप्त वित्तीय और प्रशासनिक संसाधन उपलब्ध नहीं हो सके। नतीजा यह हुआ कि जिन पंचायतों को गांव के विकास की जिम्मेदारी दी गई, वे कई जगह अपने बुनियादी कामों के लिए भी संसाधनों की कमी से जूझती रहीं।

गांव की सरकार को मजबूत करने के लिए पंचायती राज व्यवस्था को अधिकार दिए गए, ग्राम सभाओं को निर्णय की ताकत मिली और विकास योजनाओं के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी पंचायतों को सौंपी गई। लेकिन भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक यानीकैग (ष्ठ्र)की रिपोर्ट ने छत्तीसगढ़ की पंचायत व्यवस्था की ऐसी तस्वीर सामने रखी है, जो इन दावों पर गंभीर सवाल खड़े करती है।

रिपोर्ट के मुताबिक पंचायतों को पर्याप्त वित्तीय और प्रशासनिक संसाधन उपलब्ध नहीं हो सके। नतीजा यह हुआ कि जिन पंचायतों को गांव के विकास की जिम्मेदारी दी गई, वे कई जगह अपने बुनियादी कामों के लिए भी संसाधनों की कमी से जूझती रहीं कैग की रिपोर्ट में पंचायत व्यवस्था से जुड़े वित्तीय प्रबंधन, कर्मचारियों की उपलब्धता, ग्राम सभा, योजनाओं के क्रियान्वयन और निगरानी जैसे कई पहलुओं की पड़ताल की गई है।

हक मिला, लेकिन हाथ खाली रहे

पंचायतों को संविधान के 73वें संशोधन के बाद स्थानीय स्वशासन की महत्वपूर्ण इकाई के रूप में अधिकार मिले। छत्तीसगढ़ में भी पंचायतों को विकास कार्यों और स्थानीय प्रशासन से जुड़ी कई जिम्मेदारियां दी गई हैं कैग की रिपोर्ट में सामने आया कि पंचायतों को जिम्मेदारियां तो दी गईं, लेकिन उनके अनुरूप वित्तीय और प्रशासनिक संसाधनों की उपलब्धता कई मामलों में पर्याप्त नहीं रही रिपोर्ट के अनुसार राज्य वित्त आयोग से जुड़ी व्यवस्था के तहत पंचायतों को मिलने वाली राशि और उसके उपयोग की स्थिति भी सवालों के घेरे में रही यानी स्थिति कुछ ऐसी दिखाई देती है—काम पंचायत का, जिम्मेदारी पंचायत की, लेकिन संसाधनों के लिए निर्भरता ऊपर की व्यवस्था पर।

कर्मचारी नहीं तो पंचायत कैसे चले?

पंचायत व्यवस्था केवल निर्वाचित प्रतिनिधियों से नहीं चलती। पंचायत सचिव, रोजगार सहायक, तकनीकी अमला और दूसरे कर्मचारी उसके प्रशासनिक ढांचे का महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं कैग रिपोर्ट ने पंचायतों में कर्मचारियों की उपलब्धता से जुड़े मुद्दे भी सामने रखे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक बड़ी संख्या में पंचायतों में आवश्यक

मानव संसाधन की कमी रही। जब एक कर्मचारी को कई पंचायतों का काम संभालना पड़े, तो रिकॉर्ड संधारण से लेकर योजनाओं की निगरानी और विकास कार्यों के क्रियान्वयन तक उसका असर दिखाई देना स्वाभाविक है।इसका सीधा असर गांव के नागरिक पर पड़ता है।पंचायत कार्यालय में काम के लिए आने वाले ग्रामीण को यदि संबंधित कर्मचारी नहीं मिलता या फाइल और दस्तावेजों के लिए बार-बार चक्कर लगाने पड़ते हैं, तो स्थानीय स्वशासन का उद्देश्य कमजोर होता है।

29 विषय मिले, लेकिन अधिकार कितने?

पंचायती राज व्यवस्था में पंचायतों को कृषि, सिंचाई, स्वास्थ्य, शिक्षा, पेयजल और ग्रामीण विकास सहित विभिन्न विषयों से जोड़ने की व्यवस्था है।लेकिन किसी विषय की जिम्मेदारी पंचायत को सौंप देना और उसे उस विषय पर स्वतंत्र रूप से काम करने की क्षमता देना—दो अलग बातें हैं।कैग रिपोर्ट इसी अंतर को सामने लाती है।पंचायतों को जिम्मेदारियां दी गईं, लेकिन कई मामलों में उनके पास पर्याप्त वित्तीय अधिकार, कर्मचारी और प्रशासनिक क्षमता नहीं होने से योजनाओं के क्रियान्वयन में दिक्कतें आईं।यही कारण है कि पंचायती राज की बहस केवल'अधिकारों के हस्तांतरण'तक सीमित नहीं रह सकती।सवाल यह भी है किक्या अधिकारों के साथ संसाधन और जिम्मेदारी के साथ जवाबदेही भी पंचायतों तक पहुंची ?

पंचायत और डिजिटल व्यवस्था

आज शासन तेजी से डिजिटल हो रहा है। पंचायतों के रिकॉर्ड, भुगतान, योजनाओं और लेखांकन को ऑनलाइन करने के प्रयास किए जा रहे हैं।लेकिन डिजिटल व्यवस्था तभी प्रभावी होती है जब गांव के स्तर पर इंटरनेट, तकनीकी जानकारी, प्रशिक्षित कर्मचारी और नियमित डेटा एंट्री की सुविधा मौजूद हो।यदि डिजिटल प्लेटफॉर्म उपलब्ध है लेकिन पंचायत के पास उसे संचालित करने वाला पर्याप्त अमला नहीं है, तो तकनीक पारदर्शिता का माध्यम बनने के बजाय एक अतिरिक्त प्रशासनिक बोझ भी बन सकती है।कैग की रिपोर्ट में सामने आई व्यवस्थागत कमियां इस बात की ओर संकेत करती हैं किडिजिटल पंचायत के साथ सक्षम पंचायत प्रशासन भी जरूरी है।

गांव की सरकार का सवाल

पंचायती राज की मूल अवधारणा यही थी कि गांव के विकास से जुड़े फैसले गांव के स्तर पर लिए जाएं।लेकिन यदि पंचायतों को विकास कार्यों की जिम्मेदारी तो मिलती है, जबकि पैसा, कर्मचारी और निर्णय लेने की पर्याप्त क्षमता ऊपर के स्तर पर रहती है, तो विकेंद्रीकरण अधूरा रह जाता है।यही इस कैग रिपोर्ट का सबसे बड़ा संदेश दिखाई देता है।सिर्फ अधिकारों का हस्तांतरण स्थानीय स्वशासन नहीं है।अधिकार के साथ संसाधन, कर्मचारी, वित्तीय स्वतंत्रता और जवाबदेही भी जरूरी है।

कैग रिपोर्ट के 10 प्रमुख संकेत

- पंचायत व्यवस्था में अधिकारों और संसाधनों के बीच अंतर दिखाई दिया।
- पंचायतों में मानव संसाधन की कमी एक महत्वपूर्ण चुनौती रही।
- वित्तीय प्रबंधन और रिकॉर्ड व्यवस्था में कमियां सामने आईं।
- पंचायतों को सौंपे गए विषयों के अनुरूप पर्याप्त क्षमता का प्रश्न उठा।
- ग्राम सभा की प्रभावशीलता और भागीदारी पर सवाल

ग्राम सभा हुई, लेकिन लोकतंत्र कितना मजबूत हुआ?

ग्राम सभा पंचायती राज व्यवस्था की सबसे महत्वपूर्ण संस्था है। यही वह मंच है जहां गांव के लोग अपने विकास से जुड़े मुद्दों पर चर्चा करते हैं, योजनाओं को लेकर सवाल पूछते हैं और स्थानीय प्राथमिकताओं को सामने रखते हैं।कैग की रिपोर्ट में ग्राम सभाओं के आयोजन और उनकी कार्यप्रणाली से जुड़े पहलुओं पर भी सवाल उठाए गए हैं।कागज पर ग्राम सभा आयोजित होना और वास्तव में ग्रामीणों की सक्रिय भागीदारी के साथ ग्राम सभा होना—दोनों में बड़ा अंतर है।ग्राम सभा यदि केवल औपचारिक बैठक बनकर रह जाए तो पंचायती राज का लोकतांत्रिक उद्देश्य कमजोर पड़ जाता है।किस योजना पर पैसा खर्च हुआ, किस काम की जरूरत है, किसे लाभ मिला और काम की गुणवत्ता कैसी रही—इन सवालों पर ग्रामीणों की भागीदारी ही स्थानीय लोकतंत्र को मजबूत करती है।

पैसा आया, लेकिन विकास कितना हुआ?

कैग की ऑडिट रिपोर्ट का एक महत्वपूर्ण पक्ष वित्तीय प्रबंधन से जुड़ा है।पंचायतों को विकास कार्यों के लिए धन उपलब्ध कराया जाता है, लेकिन राशि के उपयोग, लेखांकन, रिकॉर्ड और निगरानी की प्रक्रिया में कमियां सामने आना केवल प्रशासनिक समस्या नहीं है।यह सीधेजनता के पैसे और जनता के अधिकारसे जुड़ा सवाल है।रिपोर्ट में ऐसे मामलों की ओर भी संकेत किया गया है जहां पंचायतों के वित्तीय प्रबंधन और कार्यों की निगरानी अपेक्षित स्तर पर नहीं रही।पंचायत को पैसा देना पहला कदम है। उस पैसे का नियमानुसार उपयोग होना, उसका रिकॉर्ड उपलब्ध होना और नागरिकों को यह पता होना कि पैसा कहां खर्च हुआ—स्थानीय शासन की विश्वसनीयता के लिए उतना ही जरूरी है।

सामने आए।

- योजनाओं के क्रियान्वयन और निगरानी में कमियां दर्ज हुईं।
- पंचायत स्तर पर उपलब्ध संसाधनों और जिम्मेदारियों में असंतुलन दिखाई दिया।
- विकास योजनाओं की निगरानी और लेखांकन व्यवस्था को लेकर कमियां सामने आईं।
- डिजिटल व्यवस्था के बावजूद जमीनी प्रशासनिक क्षमता महत्वपूर्ण बनी हुई है।
- स्थानीय स्वशासन की मूल भावना को प्रभावी बनाने के लिए 3F—Functions, Funds और Functionaries का संतुलन निर्णायक है।

कागज पर गांव की सरकार, जमीन पर कितनी स्वतंत्र?

छत्तीसगढ़ में पंचायती राज व्यवस्था को मजबूत करने के लिए संस्थागत ढांचा मौजूद है। गांवों में निर्वाचित प्रतिनिधि हैं, ग्राम सभाएं हैं और विकास योजनाओं का बड़ा हिस्सा पंचायतों के माध्यम से लागू होता है।फिर भी कैग की रिपोर्ट यह सवाल उठाती है किक्या पंचायतों को वास्तविक अर्थों में उतना सक्षम बनाया गया है, जितनी बड़ी जिम्मेदारी उन्हें दी गई है?यह सवाल किसी एक पंचायत या किसी एक जनप्रतिनिधि का नहीं है। यह पूरे स्थानीय स्वशासन की कार्यक्षमता का सवाल है।गांव की सरकार तभी मजबूत होगी, जब उसके पास निर्णय लेने का अधिकार हो, उस निर्णय को लागू करने के लिए पर्याप्त धन हो और काम करने के लिए सक्षम कर्मचारी हों।वरना व्यवस्था कागज पर विकेंद्रीकृत और व्यवहार में केंद्रीकृत बनी रह सकती है।

कैग की रिपोर्ट को केवल वित्तीय अनियमितताओं या प्रशासनिक कमियों की सूची के रूप में देखना पर्याप्त नहीं होगा। यह रिपोर्ट छत्तीसगढ़ मेंग्राम स्वराज की वास्तविक स्थितिपर भी एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है।पंचायतों को अधिकार देना लोकतंत्र का पहला कदम था।उन अधिकारों के अनुरूप संसाधन देना दूसरा।और उन संसाधनों के उपयोग के प्रति जवाबदेही तय करना तीसरा।अगर अधिकार हैं, लेकिन संसाधन नहीं; जिम्मेदारी है, लेकिन कर्मचारी नहीं; ग्राम सभा है, लेकिन प्रभावी भागीदारी नहीं—तो गांव की सरकार अभी भी अधूरी है।यही कैग रिपोर्ट का सबसे बड़ा सवाल है—

'क्या छत्तीसगढ़ में पंचायतों को सिर्फ अधिकार दिए गए हैं, या उन्हें वास्तव में शासन करने की ताकत भी मिली है?'

चरक का स्वास्थ्य दर्शन और नागपंचमी

श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी को हम नागपंचमी के रूप में मनाते हैं। भारतीय सनातन परंपरा में त्यौहार केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि जीवन, स्वास्थ्य और प्रकृति से जुड़े संदेश भी देते हैं। इसी व्यापक दृष्टि के महान आचार्य हैं–आचार्य चरक। उनकी जयंती पर उन्हें कोटि-कोटि नमन। इसी दिन नागपंचमी भी है, जिसे सामान्यतः नाग पूजा के पर्व के रूप में जाना जाता है। भारतीय दर्शन में प्रकृति केवल संसाधन नहीं, बल्कि जीवन की सहचर है। सर्प भी हमारे पारिस्थितिकी तंत्र का महत्वपूर्ण हिस्सा है। उसका सम्मान हमें प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व का संदेश देता है। यही भावना आयुर्वेद की मूल दृष्टि से भी जुड़ती है।

आचार्य चरक ने स्वास्थ्य को केवल रोग के अभाव के रूप में नहीं देखा। उनके अनुसार जीवन में क्या हितकर है और क्या अहितकर–यह समझना भी स्वास्थ्य का आधार है। आज जब अनियमित भोजन, अत्यधिक प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ, शारीरिक निष्क्रियता, तनाव, देर रात तक जागना और प्रकृति से बढ़ती दूरी जीवन का हिस्सा बन रहे हैं, चरक की यह दृष्टि और अधिक प्रासंगिक हो जाती है।

नाग का स्मरण हमें विष की याद दिलाता है। आज विष केवल सर्प के शरीर में नहीं, हमारे जीवन में भी अनेक रूपों में मौजूद है–क्रोध, तनाव, ईर्ष्या, नकारात्मकता, असंयमित भोजन और नशे जैसी आदतों के रूप में। भगवान शिव के नीलकंठ स्वरूप की तरह जीवन में आए विष को साधना और उसे अपने भीतर फैलने न देना भी विवेक का विषय है।

चरक का संदेश आज के preventive healthcare से भी जुड़ता है–स्वास्थ्य की रक्षा केवल बीमारी के बाद नहीं, बल्कि जीवनशैली के स्तर पर होनी चाहिए। संतुलित आहार, पर्याप्त नींद, नियमित शारीरिक गतिविधि, मानसिक शांति और प्रकृति के साथ सामंजस्य स्वस्थ जीवन के आधार हैं।

चरक जयंती और नागपंचमी हमें एक ही संदेश देते हैं–प्रकृति का सम्मान करें, जीवन में हित-अहित को पहचानें और स्वयं, समाज तथा प्रकृति के साथ संतुलन में जीना सीखें।

चरक जयंती एवं नागपंचमी की हार्दिक शुभकामनाएं।

आत्मनिर्भर नारी, समृद्ध छत्तीसगढ़

डॉ. दानेश्वरी संभाकर, उप संचालक

किसी भी राज्य के विकास की वास्तविक पहचान वहां की महिलाओं की सामाजिक स्थिति, आर्थिक भागीदारी और निर्णय प्रक्रिया में उनकी सहभागिता से होती है। जब महिलाएं आत्मनिर्भर बनती हैं तो परिवार सशक्त होता है, समाज प्रगतिशील बनता है और विकास की गति कई गुना बढ़ जाती है। इसी सोच को आधार बनाकर छत्तीसगढ़ सरकार ने महिला सशक्तिकरण को सुशासन का प्रमुख आधार बनाया है। वर्ष 2026 को 'महतारी गौरव वर्ष' के रूप में मनाते हुए महिलाओं के सम्मान, सुरक्षा, स्वास्थ्य, शिक्षा और आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए अनेक ऐतिहासिक निर्णय लिए गए हैं।

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व तथा महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े के मार्गदर्शन में संचालित योजनाएं आज लाखों महिलाओं के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला रही हैं।

महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने कहा कि राज्य सरकार की सबसे महत्वपूर्ण पहल महतारी वंदन योजना महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता का सशक्त माध्यम बन चुकी है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 10 मार्च 2024 को प्रारंभ की गई इस योजना के अंतर्गत प्रदेश की 66 लाख से अधिक महिलाओं को प्रतिमाह एक हजार रुपये की राशि सीधे उनके बैंक खातों में अंतरित की जा रही है। अब तक 29 किस्तों के माध्यम से 18 हजार 805 करोड़ रुपये से अधिक की राशि महिलाओं को प्राप्त हो चुकी है। वर्ष 2026-27 के बजट में योजना के लिए 8,200 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

बेटियों के भविष्य को सुरक्षित बनाने की दिशा में राज्य सरकार रानी दुर्गावती योजना प्रारंभ कर रही है। इस योजना के तहत बालिका के 18 वर्ष पूर्ण होने पर 1 लाख 50 हजार रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी। इसके लिए बजट में 15 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। वहीं प्रधानमंत्री मातृत्व वंदना योजना के लिए 120 करोड़ रुपये तथा मिशन वात्सल्य के लिए 80 करोड़ रुपये की व्यवस्था की गई है।

महिलाओं और बच्चों के बेहतर स्वास्थ्य एवं पोषण के लिए सरकार ने वर्ष 2026-27 के बजट में आंगनबाड़ी संचालन हेतु 800 करोड़ रुपये, पूरक पोषण आहार के लिए 650 करोड़ रुपये तथा कुपोषण मुक्ति एवं पोषण योजनाओं के लिए 235 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। इसके साथ ही शहरी क्षेत्रों में 250 और ग्रामीण क्षेत्रों में अभिसरण के माध्यम से 500 नए आंगनबाड़ी केंद्रों के निर्माण के लिए 42 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए हैं।

महिलाओं के लिए सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रदेश में महतारी सदन स्थापित किए जा रहे हैं। अब तक 368 महतारी सदनों को स्वीकृति मिल चुकी है, जिनमें 137 का निर्माण पूर्ण हो चुका है। वर्ष 2026-27 में 250 नए महतारी सदनों के निर्माण के लिए 75 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। इन केंद्रों के माध्यम से महिलाओं को प्रशिक्षण, आजीविका और सामाजिक गतिविधियों से जोड़ा जा रहा है।

राज्य सरकार ने महिला सुरक्षा को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए प्रदेश के सभी 33 जिलों में 34 सखी वन-स्टॉप सेंटर संचालित किए हैं। यहां घरेलू हिंसा, उत्पीड़न और संकटग्रस्त महिलाओं को कानूनी सहायता, चिकित्सकीय सुविधा, मनोवैज्ञानिक परामर्श तथा अस्थायी आश्रय एक ही स्थान पर उपलब्ध कराया जा रहा है। महिला हेल्पलाइन 181 और आपातकालीन सेवा 112 के समन्वय से त्वरित सहायता व्यवस्था भी प्रभावी रूप से संचालित हो रही है। छत्तीसगढ़ देश का पहला राज्य बना है जिसने सखी वन-स्टॉप सेंटरों के संचालन के लिए डिजिटल एसओपी लागू की है।

महिलाओं की आर्थिक प्रगति को नई गति देने के लिए स्वयं सहायता समूहों को उत्पादन और विपणन से जोड़ा जा रहा है। राज्य सरकार 200 करोड़ रुपये की लागत से यूनिटी मॉल का निर्माण कर रही है, जहां महिला समूहों द्वारा निर्मित उत्पादों को राष्ट्रीय बाजार उपलब्ध होगा। साथ ही उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिलाओं को प्रतिवर्ष युवा रत्न सम्मान प्रदान किया जाएगा तथा लखपति दीदी भ्रमण योजना के माध्यम से सफल उद्यमियों को देश-विदेश के अध्ययन भ्रमण का अवसर मिलेगा।

बिहान मिशन के अंतर्गत प्रदेश में 2.92 लाख से अधिक महिला स्वयं सहायता समूह गठित किए जा चुके हैं, जिनसे 31.65 लाख से अधिक महिलाएं जुड़ी हैं। प्रधानमंत्री के तीन करोड़ लखपति दीदी लक्ष्य में छत्तीसगढ़ ने उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करते हुए अब तक 10 लाख 43 हजार से अधिक लखपति दीदी तैयार की हैं। रेडी-टू-ईट निर्माण, कृषि आधारित उद्यम, पशुपालन, खाद्य प्रसंस्करण तथा हस्तशिल्प जैसी गतिविधियों ने ग्रामीण महिलाओं की आय में उल्लेखनीय वृद्धि की है।

महिला निर्माण श्रमिकों के सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा के लिए अनेक योजनाएं संचालित की जा रही हैं। मुख्यमंत्री नोनी सशक्तिकरण सहायता योजना के तहत पात्र बेटियों को 20 हजार रुपये, मुख्यमंत्री सिलाई मशीन सहायता योजना के तहत 7,900 रुपये, दीदी ई-रिक्शा सहायता योजना के तहत अनुदान तथा मिनीमाता महतारी जतन योजना के अंतर्गत गर्भवती महिला श्रमिकों को 20 हजार रुपये की सहायता दी जा रही है।

मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के अंतर्गत अब तक 24 हजार से अधिक बालिकाओं का सामूहिक विवाह कराया जा चुका है। प्रत्येक जोड़े के विवाह के लिए राज्य सरकार 50 हजार रुपये की सहायता उपलब्ध करा रही है।

हरेली जब माटी बोलती है और किसान मुस्कुराता है

'हरेली' शब्द का संबंध 'हरियाली' से है। वर्षा ऋतु में जब धरती हरे रंग की चादर ओढ़ लेती है, खेतों में खरीफ की फसलें लहलहाने लगती हैं और चारों ओर प्रकृति का नया रूप दिखाई देता है, तब छत्तीसगढ़ का लोकजीवन हरेली के उल्लास से भर उठता है। यही कारण है कि इसे छत्तीसगढ़ कापहला तिहार कहा जाता है।

विष्णु सरकार ने बढ़ाया किसानों का मान, खेती-किसानी को मिला नया संबल

छत्तीसगढ़ को समझना हो तो उसके खेतों, गांवों और लोकपर्वों को समझना होगा। यहां त्योहार केवल कैलेंडर की तारीख नहीं होते, बल्कि वे जीवन, प्रकृति, कृषि और सामाजिक संबंधों से जुड़े संस्कार होते हैं। इन्हीं लोकपर्वों की श्रृंखला मेंहरेली तिहारका स्थान सबसे पहला और विशेष है। सावन माह की अमावस्या को मनाया जाने वाला यह पर्व छत्तीसगढ़ की उस जीवन-दृष्टि का प्रतीक है, जिसमें धरती को मां, पशुधन को परिवार का हिस्सा और कृषि उपकरणों को जीवन के सहायक के रूप में सम्मान दिया जाता है।

'हरेली' शब्द का संबंध 'हरियाली' से है। वर्षा ऋतु में जब धरती हरे रंग की चादर ओढ़ लेती है, खेतों में खरीफ की फसलें लहलहाने लगती हैं और चारों ओर प्रकृति का नया रूप दिखाई देता है, तब छत्तीसगढ़ का लोकजीवन हरेली के उल्लास से भर उठता है। यही कारण है कि इसे छत्तीसगढ़ कापहला तिहारकहा जाता है। इसके साथ ही प्रदेश के लोकपर्वों की सांस्कृतिक यात्रा आगे बढ़ती है।

खेती के औजारों से लेकर पशुधन तक का सम्मान

हरेली मूल रूप से किसान जीवन का उत्सव है। खेती-किसानी के कठिन परिश्रम के बाद जब बोनी, ब्यासी और रोपाई जैसे प्रमुख कृषि कार्य पूरे हो जाते हैं, तब किसान अपने कृषि उपकरणों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता है।

इस दिन हल यानी नांगर, कुदाली, फावड़ा, गैती, टंगिया, बसुला, आरी, खुर्पी और खेती में उपयोग होने वाले अन्य औजारों को साफ कर पूजा के लिए सजाया जाता है। घर के आंगन में मुरूम बिछाकर कृषि उपकरणों की पूजा होती है। धूप-दीप, चंदन, फूल और नारियल अर्पित किए जाते हैं। गुड़ के चीले सहित पारंपरिक पकवानों का भोग लगाया जाता है।

यह परंपरा केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं है। इसके पीछे श्रम और साधन के प्रति सम्मान की भावना है। किसान जानता है कि उसकी मेहनत अकेली नहीं है। उसके साथ हल है, बैल हैं, मिट्टी है, पानी है और प्रकृति है। इसलिए हरेली इन सभी के प्रति आभार व्यक्त करने का अवसर बनती है।

गोधन के प्रति कृतज्ञता

छत्तीसगढ़ की पारंपरिक कृषि व्यवस्था में पशुधन का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। विशेषकर बैल ग्रामीण अर्थव्यवस्था और खेती के सच्चे साथी रहे हैं। जुताई से लेकर परिवहन तक किसान लंबे समय तक बैलों पर निर्भर रहे हैं।

हरेली के दिन गाय, बैल और बछड़ों को नहलाया-धुलाया जाता है। उनकी पूजा की जाती है और उन्हें औषधीय मिश्रण से तैयार आटे की लोंदी खिलाने की परंपरा रही है। कई क्षेत्रों में अरंडी और खम्हार जैसे पेड़ों की पत्तियों के साथ स्थानीय वनौषधियों का उपयोग किया जाता है।

ग्रामीण जीवन की यह परंपरा हमें यह संदेश देती है कि पशुधन केवल आर्थिक संसाधन नहीं, बल्कि किसान के जीवन का अभिन्न हिस्सा है। उनके स्वास्थ्य की चिंता भी उतनी ही जरूरी है जितनी फसल की।

गेड़ी के बिना अधूरा है हरेली का रंग

हरेली का सबसे आकर्षक और जीवंत पक्ष है—गेड़ी। बांस से तैयार की जाने वाली गेड़ी पर चढ़ना आज भी बच्चों और युवाओं के लिए उत्सव का सबसे बड़ा आकर्षण है।

दो लंबे बांसों पर निश्चित ऊंचाई पर पैर रखने के लिए पउआ लगाए जाते हैं। गेड़ी पर चढ़कर गांव की गलियों में घूमना, दौड़ लगाना और तरह-तरह के खेल खेलना हरेली की पुरानी परंपरा है।

कभी बारिश के दिनों में गांव की गलियां कीचड़ और पानी से भर जाती थीं। उस समय गेड़ी चलना एक उपयोगी साधन भी था। धीरे-धीरे यही उपयोगिता मनोरंजन और लोकखेल में बदल गई।

आज भी हरेली के अवसर पर गेड़ी दौड़, नारियल फेंक, कबड्डी, खो-खो, फुगड़ी, बिल्लस, अत्ती-पत्ती और अन्य पारंपरिक खेलों का आयोजन कई स्थानों पर किया जाता है। गांव का मैदान हो या चौक-चौराहा, हरेली के दिन लोकजीवन अपनी पूरी ऊर्जा के साथ दिखाई देता है।

लोक व्यंजनों में घुला उत्सव

हरेली का स्वाद भी उतना ही विशिष्ट है जितना इसका रंग। घरों में गुड़हा चीला, गुलगुला भजिया, अईरसा, चौसेला, बोबरा, सोहारी, बड़ा, ठेठरी और खुरमी जैसे पारंपरिक छत्तीसगढ़ी पकवान बनाए जाते हैं।

इन व्यंजनों को केवल परिवार के लिए नहीं बनाया जाता, बल्कि कृषि उपकरणों और पशुधन को भी भोग लगाया जाता है। इस परंपरा में भोजन भी कृतज्ञता का माध्यम बन जाता है।

नीम, औषधि और लोकविश्वास

हरेली के दिन घरों के दरवाजों पर नीम की डालियां लगाने की परंपरा भी कई गांवों में देखने को मिलती है। स्थानीय मान्यताओं में इसे नकारात्मक शक्तियों और रोगों से सुरक्षा से जोड़ा गया है। नीम के औषधीय गुणों का पारंपरिक ज्ञान ग्रामीण जीवन में लंबे समय से मौजूद रहा है। इसी तरह वनौषधियों का उपयोग पशुधन के स्वास्थ्य के लिए भी किया जाता रहा है। इस तरह लोकविश्वास और स्थानीय स्वास्थ्य ज्ञान हरेली की परंपराओं में साथ-साथ दिखाई देते हैं।

गांवों में लोहार द्वारा चौखट पर कील लगाने तथा पौनी-पसारी समुदाय के लोगों द्वारा नीम की डाली लगाने की परंपराएं भी सामाजिक और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करती रही हैं।

हरेली और सामाजिक समरसता

हरेली केवल किसान का पर्व नहीं है। यह पूरे गांव का उत्सव है। इसमें किसान, कारीगर, पशुपालक, बच्चे, महिलाएं, युवा और बुजुर्ग सभी सहभागी बनते हैं। गांव के ठाकुरदेव या ग्रामदेवता की पूजा होती है। परिवार सुख-समृद्धि की कामना करता है। बच्चे और युवा खेलते हैं। महिलाएं पारंपरिक व्यंजन बनाती हैं। विभिन्न समुदायों के लोग अपनी पारंपरिक भूमिकाओं के साथ पर्व में भाग लेते हैं। यही कारण है कि हरेली कोसामाजिक समरसता और सामुदायिक सहभागिता का पर्वभी कहा जा सकता है। यह हमें बताता है कि गांव केवल घरों का समूह नहीं, बल्कि परस्पर सहयोग और विश्वास से बना सामाजिक संसार है।

विष्णु सरकार ने बढ़ाया किसानों का मान

हरेली का संदेश केवल परंपरा तक सीमित नहीं है। आज जब कृषि और किसान प्रदेश की अर्थव्यवस्था के केंद्र में हैं, तब किसान की आर्थिक मजबूती भी उतनी ही महत्वपूर्ण हो जाती है।

मुख्यमंत्रीविष्णु देव सायके नेतृत्व में छत्तीसगढ़ सरकार ने किसानों को समर्थन देने के लिए कई नीतिगत फैसले लिए हैं। सरकार के अनुसार बीते खरीफ विपणन वर्ष में समर्थन मूल्य पर किसानों से141.05 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदीकी गई।

सरकार ने पंजीकृत किसानों से प्रति एकड़ 21 क्विंटल धान की खरीदी 3100 रुपये प्रति क्विंटल की दर से करने का निर्णय भी लागू किया है। इसके साथ पिछले दो वर्षों के बकाया धान बोनस के रूप में3716.38 करोड़ रुपयेकिसानों के खातों में अंतरित किए जाने की जानकारी सरकार ने दी है।

इन फैसलों को सरकार खेती-किसानी को आर्थिक संबल देने और किसानों की आय तथा क्रयशक्ति बढ़ाने से जोड़ती है। इसका व्यापक प्रभाव ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। किसान की आय बढ़ती है तो गांव में व्यापार, बाजार, परिवहन और छोटे उद्योगों में भी गतिविधियां बढ़ती हैं। हरेली के संदर्भ में यह बात इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह पर्व हमें बार-बार याद दिलाता है कि छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था की जड़ें खेत और किसान में हैं।किसान खुशहाल होगा तो गांव मजबूत होगा और गांव मजबूत होगा तो प्रदेश की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी।

परंपरा से भविष्य तक

आज गांव बदल रहे हैं। पक्की सड़कें बन रही हैं। कृषि के तौर-तरीके बदल रहे हैं। आधुनिक मशीनें खेती में प्रवेश कर रही हैं। बच्चों का खेल भी मोबाइल और डिजिटल स्क्रीन तक पहुंच गया है। ऐसे समय में हरेली जैसे लोकपर्वों का महत्व और बढ़ जाता है।

क्योंकि हरेली हमें केवल अतीत की याद नहीं दिलाती, बल्कि भविष्य के लिए भी एक संदेश देती है—प्रकृति का सम्मान करो, श्रम का सम्मान करो, किसान का सम्मान करो और अपनी लोकपरंपराओं को जीवित रखो।

हरेली के हरेपन में छत्तीसगढ़ की मिट्टी की खुशबू है। गेड़ी की रच-रच की आवाज में बचपन की स्मृतियां हैं। गुड़ के चीले की मिठास में परिवार है। कृषि उपकरणों की पूजा में श्रम का सम्मान है और गोधन की सेवा में सहजीवन की भावना।यही हरेली की असली शक्ति है।

यह केवल सावन की अमावस्या का एक दिन नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़ की उस जीवन-दृष्टि का उत्सव है जिसमेंप्रकृति, कृषि, पशुधन, लोकसंस्कृति और समाज एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।और जब किसान के मान के साथ हरेली का हरापन जुड़ता है, तब यह पर्व केवल परंपरा नहीं रहता—यह छत्तीसगढ़ की पहचान बन जाता है।

उज्जैन का विकास मॉडल

जमीन किसकी, लाभ किसका?

> अब एक सवाल -सिंहस्थ 2028 के बाद जब लाखों श्रद्धालु उज्जैन से लौट जाएंगे...जब सड़कें खाली होंगी...जब अस्थायी शिविर हट जाएंगे...जब कैमरे दूसरे शहरों की तरफ मुड़ जाएंगे...तब उज्जैन के पास क्या बचेगा? कुछ शानदार सड़कें? कुछ नए होटल? कुछ नए व्यावसायिक क्षेत्र?या एक ऐसा शहर जो विकास के साथ अपनी आत्मा, अपनी नदी, अपनी संस्कृति और अपने नागरिकों को भी साथ लेकर चला? यही असली प्रश्न है।

मध्यप्रदेश की धर्मनगरी उज्जैन अब बदल रहा है। बहुत तेजी से बदल रहा है। सड़कें चौड़ी हो रही हैं। नए मार्ग बन रहे हैं। शहर की सीमाएं फैल रही हैं। आवासीय और व्यावसायिक क्षेत्रों का विस्तार हो रहा है। सिंहस्थ 2028 की तैयारी के नाम पर आधारभूत ढांचे को नया आकार दिया जा रहा है। और इस पूरे परिवर्तन के केंद्र में है—जमीन। मगर उज्जैन को समझना हो तो केवल नक्शा मत देखिए।महाकाल की नगरी का नक्शा पढ़ने के लिए उसकी गलियों में उतरना पड़ेगा। उन गलियों में जहां सदियों से श्रद्धा चलती आई है, जहां क्षिप्रा की धारा के साथ आस्था बहती है और जहां हर कुछ वर्षों में देश के कोने-कोने से आने वाला जनसमुदाय इस शहर को अस्थायी रूप से एक विराट आध्यात्मिक महानगर में बदल देता है।

सिंहस्थ 2028–उज्जैन के लिए अवसर या जमीन की सबसे बड़ी परीक्षा?

सिंहस्थ केवल धार्मिक आयोजन नहीं है। यह मध्य प्रदेश के लिए आर्थिक अवसर भी है। पर्यटन का अवसर है। इन्फ्रास्ट्रक्चर का अवसर है।रोजगार का अवसर है। और उज्जैन के लिए शायद सदियों में मिलने वाला सबसे बड़ा शहरी परिवर्तन भी। सरकार की दृष्टि से देखें तो सिंहस्थ के लिए सड़क, परिवहन, आवास, जल, स्वच्छता, स्वास्थ्य और सुरक्षा जैसी सुविधाओं को स्थायी रूप से मजबूत करना आवश्यक है।यानी विकास होना चाहिए। लेकिन सवाल है—विकास किसके लिए? किस कीमत पर? और किस प्रक्रिया से?

यदि किसी गांव की कृषि भूमि सड़क के लिए ली जाती है तो किसान को कितना मुआवजा मिलेगा? यदि जमीन का उपयोग कृषि से आवासीय या व्यावसायिक होता है तो उससे पैदा होने वाले मूल्य का लाभ किसे मिलेगा?यदि किसी सड़क के बनने से आसपास की जमीन की कीमत कई गुना बढ़ती है तो उस मूल्य वृद्धि में जमीन मालिक, सरकार और आम नागरिक के हितों का संतुलन कैसे बनेगा? यही वह जगह है जहां उज्जैन की कहानी केवल भाजपा बनाम कांग्रेस नहीं रह जाती। यहभूमि नीति बनाम जनहितकी कहानी बन जाती है।

विकास की जमीन और सवालों की राजनीति

उज्जैन में मुख्यमंत्री मोहन यादव के परिवार और उनसे जुड़ी रियल एस्टेट कंपनियों की जमीन खरीद को लेकर जून 2026 में एक मीडिया जांच सामने आई।ड्डुठ्ठस्नद्बड्डठ्ठ श्व×श्चह्मद्गह्यह्यकी रिपोर्ट के

मुताबिक, दिसंबर 2023 के बाद मुख्यमंत्री के परिवार और उनसे जुड़ी कंपनियों ने उज्जैन में कम से कम 137 प्लॉट, लगभग 168 एकड़ जमीन खरीदी। रिपोर्ट ने यह भी कहा कि इनमें बड़ी मात्रा ऐसी जमीन की थी जो प्रस्तावित या घोषित सड़क परियोजनाओं तथा भविष्य के विकास क्षेत्रों से जुड़ी थी।

इन रिपोर्टों के बाद कांग्रेस ने मुख्यमंत्री और उनके परिवार पर हितों के टकराव का आरोप लगाते हुए न्यायिक जांच की मांग की। लेकिन कहानी का दूसरा पक्ष भी है। मुख्यमंत्री कार्यालय ने आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि मोहन यादव या उनके परिवार के सदस्यों ने मुख्यमंत्री बनने के बाद जमीन नहीं खरीदी।यानी फिलहाल राजनीतिक बहस दो दावों के बीच खड़ी है। एक तरफ मीडिया रिपोर्टों में सामने आए भूमि रिकॉर्ड और उनसे जुड़े सवाल।दूसरी तरफ मुख्यमंत्री कार्यालय का खंडन।इसलिए इस पूरे मामले को किसी निष्कर्ष पर पहुंचा हुआ घोटाला मानना पत्रकारिता की दृष्टि से उचित नहीं होगा।लेकिन सवाल उठना भी स्वाभाविक है।

शहर में नई सड़क बनती है। सड़क के किनारे जमीन की कीमत बढ़ती है। मास्टर प्लान बदलता है।कृषि भूमि आवासीय हो सकती है। नई कॉलोनियां आती हैं।व्यापार बढ़ता है। होटल बनते हैं।धर्मशालाएं बनती हैं। पर्यटन बढ़ता है।और धीरे-धीरे जमीन केवल जमीन नहीं रहती। वह निवेश बन जाती है। यहीं राजनीति और रियल एस्टेट के बीच की संवेदनशील रेखा शुरू होती है। शहरी नियोजन में यह सामान्य बात है कि सरकारी फैसलों से जमीन के मूल्य बदलते हैं। लेकिन लोकतंत्र की कसौटी यह है किसरकार द्वारा लिए गए फैसलों से पैदा होने वाले आर्थिक लाभ का वितरण कितना पारदर्शी है। किसे पहले जानकारी मिली? किसने जमीन खरीदी? किस क्षेत्र का भू-उपयोग बदला? किस सड़क को प्राथमिकता मिली? किस किसान की जमीन गई? किसे कितना मुआवजा मिला? और किसे उस विकास से अप्रत्याशित लाभ मिला? ये सवाल किसी एक दल के खिलाफ नहीं हैं। ये सुशासन के सवाल हैं।

चुनाव अभी दूर है, लेकिन राजनीति शुरु हो चुकी है

मध्य प्रदेश का अगला विधानसभा चुनाव 2028 में होगा। तीन साल राजनीति

में बहुत लंबा समय होता है।लेकिन राजनीतिक स्मृति बहुत छोटी भी नहीं होती। आज किए गए फैसले तीन साल बाद मुद्दे बन सकते हैं। आज की जमीन कल का चुनावी भाषण बन सकती है।आज का विकास मॉडल कल की सरकार के मूल्यांकन का आधार बन सकता है।और उज्जैन इसीलिए महत्वपूर्ण है। क्योंकि 2028 में भाजपा के सामने केवल सत्ता बचाने का प्रश्न नहीं होगा। उसके सामने अपने शासन के मॉडल को जनता के सामने प्रमाणित करने का प्रश्न होगा।भाजपा कहेगी—हमने सड़कें बनाईं। हमने धार्मिक पर्यटन बढ़ाया। हमने सिंहस्थ की तैयारी की। हमने उज्जैन को विश्वस्तरीय बनाने का प्रयास किया। विपक्ष पूछेगा—किस कीमत पर? किसके लिए? और किसे लाभ मिला? यही लोकतंत्र है।सरकार विकास का हिसाब देगी। विपक्ष सवाल पूछेगा।और अंततः जनता तय करेगी कि उसे कौन-सा मॉडल स्वीकार है।

उज्जैन की जमीन का सवाल कांग्रेस के लिए राजनीतिक अवसर जरूर है। लेकिन केवल आरोप लगाना पर्याप्त नहीं होगा।कांग्रेस को यह बताना पड़ेगा कि सत्ता में आने पर उसकी भूमि नीति क्या होगी।क्या वह जमीन अधिग्रहण में किसानों को बेहतर मुआवजा देगी? क्या वह शहरी विकास में स्थानीय लोगों को भागीदार बनाएगी? क्या वह भूमि उपयोग परिवर्तन को सार्वजनिक करेगी? क्या बड़े प्रोजेक्ट्स में सामाजिक प्रभाव का आकलन अनिवार्य करेगी? क्या सरकारी परियोजनाओं से जमीन की कीमत बढ़ने पर उसके लाभ का कुछ हिस्सा स्थानीय समुदाय तक पहुंचाने का मॉडल बनाएगी? यदि कांग्रेस केवल यह कहती रही कि भाजपा भ्रष्ट है, तो वह आधी राजनीति करेगी।उसे यह भी बताना होगा—हम होते तो क्या करते?

अब एक सवाल -सिंहस्थ 2028 के बाद जब लाखों श्रद्धालु उज्जैन से लौट जाएंगे...जब सड़कें खाली होंगी...जब अस्थायी शिविर हट जाएंगे...जब कैमरे दूसरे शहरों की तरफ मुड़ जाएंगे...तब उज्जैन के पास क्या बचेगा? कुछ शानदार सड़कें?कुछ नए होटल? कुछ नए व्यावसायिक क्षेत्र?या एक ऐसा शहर जो विकास के साथ अपनी आत्मा, अपनी नदी, अपनी संस्कृति और अपने नागरिकों को भी साथ लेकर चला?यही असली प्रश्न है।और शायद यही मोहन यादव सरकार की सबसे बड़ी परीक्षा भी।

2028 का चुनाव केवल यह तय नहीं करेगा कि मध्य प्रदेश में अगली सरकार किसकी होगी। वह यह भी तय करेगा कि जनताकिस तरह के विकास मॉडल पर भरोसा करती है।ऐसा विकास जिसमें जमीन सबसे पहले निवेश हो...या ऐसा विकास जिसमें जमीन सबसे पहलेजनता की विरासत हो। उज्जैन का भविष्य केवल महाकाल के आशीर्वाद से नहीं लिखा जाएगा। उसे लिखेंगे—

सरकार के फैसले,
जनता की भागीदारी,
जमीन की पारदर्शिता
और 2028 में दिया गया मत।

क्योंकि महाकाल की नगरी में सबसे बड़ा सवाल यही है—विकास होगा, यह तय है। लेकिन विकास का लाभ किसे मिलेगा?

विकास की उड़ान, किसानों की जमीन—रीवा में नई कशमकश

अनामिका पाण्डेय

किसी शहर के विकास को समझना हो तो उसकी सड़कों को देखिए, उसकी रेल कनेक्टिविटी को देखिए और फिर उसके आसमान को देखिए। क्योंकि जब किसी शहर के आसमान में विमानों की आवाजाही बढ़ती है, तो अक्सर उसके नीचे की अर्थव्यवस्था भी बदलने लगती है। रीवा आज इसी बदलाव के मुहाने पर खड़ा है। विंध्य की पहचान लंबे समय तक अपनी प्राकृतिक संपदा, कृषि, ऐतिहासिक विरासत और संघर्षशील समाज के लिए रही। लेकिन अब रीवा की कहानी में एक नया अध्याय जुड़ रहा है—कनेक्टिविटी और विकास का।

रीवा एयरपोर्ट से उड़ानें बढ़ रही हैं। भोपाल और कोलकाता जैसे शहरों से सीधा संपर्क मजबूत हो रहा है। और इससे पहले रीवा को रायपुर से जोड़ने वाली सीधी विमान सेवा भी शुरू हो चुकी है।औरकेंद्र में खड़े हैं मध्य प्रदेश के उपमुख्यमंत्रीराजेंद्र शुक्ल।लेकिन इस पूरी विकास यात्रा के बीच एक ऐसा सवाल भी है जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता—जिस जमीन पर विकास का रनवे लंबा होगा, उस जमीन के मालिक किसान इस विकास में कितनी दूर तक साथ उड़ पाएंगे?

रीवा से रायपुर की सीधी विमान सेवा महज दो शहरों को जोड़ने वाली परिवहन सुविधा नहीं है। इन दोनों के बीच सीधी हवाई कनेक्टिविटी का अर्थ है कि अब विंध्य और छत्तीसगढ़ के बीच आवागमन का एक नया रास्ता खुल गया है।व्यापारी के लिए बाजार तक पहुंच आसान हो सकती है।मरीज के लिए बड़े चिकित्सा केंद्र तक पहुंचने में समय कम हो सकता है।विद्यार्थी के लिए शिक्षा के नए विकल्प खुल सकते हैं। नौकरी और व्यवसाय के लिए यात्रा आसान हो सकती है। और निवेशक के लिए क्षेत्र की भौगोलिक दूरी कम हो सकती है।

रीवा की राजनीति में राजेंद्र शुक्ल लंबे समय से विकास और क्षेत्रीय आकांक्षाओं के प्रमुख चेहरे रहे हैं। विंध्य क्षेत्र की पुरानी शिकायत रही है कि प्रदेश के विकास की मुख्यधारा में उसे वह स्थान नहीं मिला जिसका वह हकदार था। इसीलिए सड़क, सिंचाई, उद्योग, स्वास्थ्य, शिक्षा और अब हवाई कनेक्टिविटी जैसे मुद्दे केवल प्रशासनिक परियोजनाएं नहीं हैं। वे विंध्य की राजनीतिक आकांक्षा से भी जुड़े हैं।यदि एयरपोर्ट बड़े विमानों के लिए सक्षम होता है, उड़ानों की संख्या बढ़ती है और रीवा देश के प्रमुख शहरों से सीधे जुड़ता है तो इसका असर केवल रीवा शहर तक सीमित नहीं रहेगा। सतना, सीधी, सिंगरौली, मैहर और आसपास के विंध्य क्षेत्र को

भी इसका लाभ मिल सकता है। यानी रीवा अब केवल अपने आसपास के जिलों का केंद्र नहीं रहना चाहता। वह क्षेत्रीय आर्थिक केंद्र बनने की दिशा में बढ़ रहा है।

लेकिन हर बड़े विकास प्रोजेक्ट की एक कीमत होती है।रीवा एयरपोर्ट के रनवे विस्तार के लिए लगभग 140 एकड़ अतिरिक्त जमीन की आवश्यकता बताई जा रही है। करीब 830 किसानों के प्रभावित होने की बात सामने आई है। सरकार की ओर से लगभग 340 करोड़ रुपये के मुआवजे की जानकारी भी सामने आई है।यहां से दूसरा पक्ष शुरू होता है।सरकार कह सकती है—एयरपोर्ट बनेगा तो विकास होगा। किसान पूछ सकता है—विकास होगा, लेकिन मेरे परिवार का क्या होगा? क्या उसके बच्चों को रोजगार मिलेगा? क्या प्रभावित परिवारों को कौशल प्रशिक्षण मिलेगा? क्या एयरपोर्ट से पैदा होने वाली नई आर्थिक गतिविधियों में स्थानीय युवाओं को प्राथमिकता मिलेगी? क्या स्थानीय लोगों को टैक्सी, होटल, लॉजिस्टिक्स, फूड सर्विस, वेयरहाउसिंग और अन्य सेवाओं में अवसर मिलेंगे? दोनों सवाल गलत नहीं हैं। विकास के लिए भूमि चाहिए। लेकिन भूमि देने वाले व्यक्ति का भविष्य भी सुरक्षित रहना चाहिए।यही लोकतांत्रिक विकास की कसौटी है।

रीवा मॉडल क्यों नहीं बन सकता ?

क्या रीवा में ऐसा मॉडल बनाया जा सकता है जिसे पूरा मध्य प्रदेश उदाहरण के रूप में देख सके। एयरपोर्ट के प्रभावित परिवारों के लिए विशेष कौशल विकास कार्यक्रम।स्थानीय युवाओं के लिए एयरपोर्ट और एविएशन सेक्टर से जुड़े प्रशिक्षण। टैक्सी और परिवहन सेवाओं में स्थानीय उद्यमियों को अवसर।स्थानीय किसानों और छोटे कारोबारियों को एयरपोर्ट की सप्लाई चेन से जोड़ना। पर्यटन सर्किट विकसित करना। स्थानीय हस्तशिल्प और उत्पादों को नए बाजार देना।

राजेंद्र शुक्ल के सामने यही सबसे बड़ा अवसर है। रीवा एयरपोर्ट को केवल एक सरकारी परियोजना के रूप में पूरा करना एक उपलब्धि होगी। लेकिन उसेविंध्य के आर्थिक पुनर्जागरण का प्रवेश द्वार बना देना उससे कहीं बड़ी राजनीतिक और प्रशासनिक उपलब्धि होगी। रीवा को रायपुर से जोड़ना इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।आगे इसे अन्य महानगरो से जोड़ने की क्षमता विकसित होती है तो विंध्य के लिए नए अवसर खुलेंगे। लेकिन यह तभी सफल होगा जब कनेक्टिविटी के साथ अर्थव्यवस्था भी जुड़े।

2028 में जब मध्य प्रदेश की जनता फिर राजनीतिक दलों से सवाल करेगी, तब केवल यह नहीं पूछा जाएगा कि कितनी घोषणाएं हुईं।यह पूछा जाएगा—हमारे क्षेत्र में वास्तव में क्या बदला?

विकास की नई रफ्तार, मध्यप्रदेश के पांच कॉरिडोर

सड़कें सिर्फ दूरी नहीं घटातीं, वे अर्थव्यवस्था की दिशा बदलती हैं। मध्यप्रदेश में तेजी से विकसित हो रहे आर्थिक और राष्ट्रीय राजमार्ग कॉरिडोर आने वाले वर्षों में प्रदेश के औद्योगिक, व्यापारिक और पर्यटन मानचित्र को नया आकार दे सकते हैं। सरकार का फोकस अब केवल शहरों को जोड़ने तक सीमित नहीं है, बल्कि ऐसे सड़क नेटवर्क के निर्माण पर है, जो उद्योगों, बाजारों, कृषि उत्पादों, पर्यटन स्थलों और रोजगार के अवसरों को एक-दूसरे से जोड़ सके।

मध्यप्रदेश में इस समय पांच प्रमुख आर्थिक कॉरिडोर विकसित किए जा रहे हैं। इनमें केंद्र की भारतमाला परियोजना के तहत विकसित हो रहे चार कॉरिडोर के साथ इंदौर-पीथमपुर-धार इकोनॉमिक कॉरिडोर भी शामिल है, जिसका निर्माण प्रदेश का उद्योग विभाग करा रहा है। इन परियोजनाओं पर काम शुरू हो चुका है और अगले दो वर्षों में इनके तैयार होने की उम्मीद है।

इन कॉरिडोरों को मजबूत कनेक्टिविटी देने के लिए राष्ट्रीय राजमार्गों का नेटवर्क भी लगातार विस्तार पा रहा है। पिछले तीन वर्षों में भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI) मध्यप्रदेश में 21,325 करोड़ रुपये से अधिक खर्च कर चुका है। इस निवेश से 12 राष्ट्रीय राजमार्गों को चार और छह लेन में विकसित किया जा रहा है। इनमें आधा दर्जन से अधिक परियोजनाएं पूरी होकर यातायात के लिए खोली जा चुकी हैं।

बुंदेलखंड को नई रफ्तार देगा सागर-कबरई कॉरिडोर

सागर-कबरई नेशनल हाईवे मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र के बीच संपर्क का महत्वपूर्ण मार्ग है। मुख्य रूप से एनएच-34 और एनएच-934 से जुड़े इस फोरलेन मार्ग का उद्देश्य सागर से छतरपुर होते हुए मध्यप्रदेश-उत्तरप्रदेश सीमा और कबरई तक तेज एवं सुगम आवागमन उपलब्ध कराना है।

यह मार्ग भोपाल-कानपुर-लखनऊ कनेक्टिविटी का महत्वपूर्ण हिस्सा है। बेहतर सड़क संपर्क से बुंदेलखंड में माल परिवहन, व्यापार और पर्यटन को गति मिलने की उम्मीद है। सड़क की गुणवत्ता और यात्रा समय में कमी का सीधा लाभ स्थानीय कारोबार और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को मिल सकता है।

सागर-मोहरी: पर्यटन और व्यापार दोनों के लिए महत्वपूर्ण

एनएच-934 का सागर-मोहरी खंड लगभग 42.3 किलोमीटर लंबा चार लेन का राजमार्ग है। यह भोपाल-कानपुर कॉरिडोर का हिस्सा है और मध्यप्रदेश-उत्तरप्रदेश के बीच आवागमन तथा माल ढुलाई को आसान बनाने के उद्देश्य से विकसित किया जा रहा है।

इस मार्ग का एक बड़ा लाभ पर्यटन क्षेत्र को भी मिल सकता है। सागर से खजुराहो और आसपास के पर्यटन स्थलों तक पहुंच आसान होने से पर्यटकों के आवागमन में सुविधा बढ़ेगी। खजुराहो और पन्ना जैसे क्षेत्रों के लिए बेहतर सड़क संपर्क स्थानीय होटल, परिवहन, छोटे कारोबार और पर्यटन आधारित रोजगार को भी बढ़ावा दे सकता है।

दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे: मध्यप्रदेश की बड़ी कनेक्टिविटी

मध्यप्रदेश के लिए दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे सबसे महत्वपूर्ण हाई-स्पीड कनेक्टिविटी परियोजनाओं में से एक है। प्रदेश में इसका लगभग 244 किलोमीटर हिस्सा गुजरता है और यह राज्य को एक ओर गुजरात तथा दूसरी ओर राजस्थान और दिल्ली से जोड़ता है।

गरोठ, जावरा और थांदला के आसपास प्रमुख इंटरचेंज इस नेटवर्क को क्षेत्रीय शहरों और औद्योगिक क्षेत्रों से जोड़ते हैं। इस एक्सप्रेसवे से मध्यप्रदेश के पश्चिमी हिस्से की राष्ट्रीय बाजारों तक पहुंच आसान होने की उम्मीद है। तेज सड़क संपर्क का लाभ उद्योग, लॉजिस्टिक्स, कृषि उत्पादों और पर्यटन—सभी क्षेत्रों को मिल सकता है।

इंदौर-हरदा-राघौगढ: माल परिवहन का नया मार्ग

इंदौर-हरदा-राघौगढ़ खंड, जो एनएच-47 से जुड़ा है, मध्यप्रदेश के औद्योगिक और व्यापारिक नेटवर्क के लिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है। यह इंदौर को हरदा और आगे नागपुर-हैदराबाद दिशा से जोड़ने वाली कनेक्टिविटी को मजबूत करता है।

इंदौर बायपास के पास से शुरू होकर बेगमखेड़ी, खुड़ैल, गोगाखेड़ी और मिर्जापुर होते हुए राघौगढ़ तक जाने वाला यह फोरलेन मार्ग क्षेत्रीय यातायात और माल ढुलाई को अधिक सुगम बनाने में मदद कर सकता है।

इंदौर-पीथमपुर इकोनॉमिक कॉरिडोर: उद्योगों के लिए नई धुरी

इन सभी परियोजनाओं में इंदौर-पीथमपुर इकोनॉमिक कॉरिडोर (IPEC) का महत्व अलग है। यह केवल सड़क परियोजना नहीं, बल्कि इंदौर और देश के प्रमुख औद्योगिक केंद्रों में शामिल पीथमपुर के बीच आर्थिक गतिविधियों को तेज करने की योजना है।

लगभग 20.3 किलोमीटर लंबी इस परियोजना की अनुमानित लागत करीब 2,360 करोड़ रुपये है। प्रस्तावित कॉरिडोर की चौड़ाई लगभग 675 मीटर और मुख्य सड़क की चौड़ाई करीब 75 मीटर बताई गई है।

इंदौर और पीथमपुर के बीच औद्योगिक गतिविधियों के बढ़ते दबाव को देखते हुए यह कॉरिडोर माल परिवहन, लॉजिस्टिक्स और निवेश के लिए महत्वपूर्ण आधारभूत ढांचा तैयार कर सकता है। बेहतर कनेक्टिविटी का अर्थ है—कम यात्रा समय, बेहतर लॉजिस्टिक्स और उद्योगों के लिए अधिक प्रतिस्पर्धी माहौल।

सड़क से आगे की कहानी

मध्यप्रदेश में बन रहे ये कॉरिडोर सिर्फ डामर और कंक्रीट की सड़कें नहीं हैं। इनके पीछे एक बड़ा आर्थिक लक्ष्य है—सड़क, उद्योग, निवेश, बाजार और रोजगार को एक नेटवर्क में जोड़ना।

जब किसी औद्योगिक क्षेत्र तक कच्चा माल तेजी से पहुंचता है और तैयार माल बड़े बाजारों तक कम समय में पहुंचने लगता है, तो परिवहन लागत घटती है। इससे नए निवेश के लिए माहौल बनता है और उसके साथ रोजगार के अवसर भी पैदा होते हैं।

बुंदेलखंड में पर्यटन और व्यापार, मालवा में उद्योग और लॉजिस्टिक्स तथा पश्चिमी मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय बाजारों से जुड़ाव—इन सभी को इन परियोजनाओं से नई गति मिलने की उम्मीद है।

आने वाले वर्षों में इन कॉरिडोरों की असली सफलता केवल इस बात से नहीं मापी जाएगी कि कितने किलोमीटर सड़क बनी, बल्कि इससे होगी कि कितना निवेश आया, कितने उद्योग जुड़े, कितना माल तेजी से बाजार तक पहुंचा और कितने लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर बने।

यानी मध्यप्रदेश में बन रही ये सड़कें सिर्फ शहरों के बीच दूरी कम नहीं कर रहीं—वे प्रदेश की अर्थव्यवस्था के लिए नई राह तैयार कर रही हैं।

झरनों की रवानी और माटी की खुशबू

जशपुर

जहां जंगल मुस्कुराते हैं

> जशपुर की सुबह का अपना अलग रंग है। घने साल के जंगलों के बीच से छनकर आती धूप, पहाड़ियों के ऊपर तैरते बादल और दूर से सुनाई देती पक्षियों की आवाजें वातावरण को एक अलग ही शांति देती हैं।बारिश के मौसम में जशपुर और भी खूबसूरत हो उव्ता है। पहाड़ों पर हरियाली की चादर बिछ जाती है और जगह–जगह छोटे–बड़े झरने जीवंत हो उव्ते हैं।

यात्रा संस्मरण

नरेन्द्र पाण्डेय

कभी-कभी शहर से दूर जाना सिर्फ यात्रा नहीं होता, बल्कि खुद के पास लौटने जैसा होता है। महानगरों की भागदौड़, ट्रैफिक का शोर और लगातार भागते समय के बीच जब मन थकने लगे, तब प्रकृति अपने दरवाजे खोलती है। छत्तीसगढ़ काजशपुरऐसा ही एक निमंत्रण है— जहां पहाड़ हैं, जंगल हैं, झरने हैं, नदियां हैं और इनके बीच सदियों से अपनी संस्कृति को संजोकर जीता हुआ आदिवासी जीवन है।

जशपुर की यात्रा मेरे लिए केवल कुछ पर्यटन स्थलों को देखने की यात्रा नहीं, बल्कि प्रकृति, संस्कृति और ग्रामीण जीवन को करीब से महसूस करने का अनुभव है। यहां पहुंचते ही शहर का शोर पीछे छूट जाता है और सामने खुलती है हरियाली की एक लंबी दुनिया।

पहाड़ियों के बीच खुलती है जशपुर की सुबह

जशपुर की मेरी यात्रा उस समय हुई जब सावन अपने पूरे यौवन पर है। चारों ओर हरियाली की ऐसी चादर बिछी है कि नज़र जहाँ तक जाती है, केवल हरे रंग के अनगिनत स्वरूप दिखाई देते हैं।हर मोड़ पर प्रकृति एक नया दृश्य प्रस्तुत कर रही है। कहीं बादल पहाड़ियों को अपनी बाँहों में समेटे हुए हैं, तो कहीं धुंध की हल्की चादर पूरी घाटी को रहस्य और सौंदर्य से भर देती है। सड़क के दोनों ओर घने वृक्ष, चट्टानों से रिसते छोटे-छोटे झरने और दूर तक फैली पर्वत श्रृंखलाएँ... ऐसा लगता है जैसे प्रकृति स्वयं एक जीवंत चित्र बनकर हमारे सामने खड़ी हो।

जशपुर की सुबह का अपना अलग रंग है। घने साल के जंगलों के बीच से छनकर आती धूप, पहाड़ियों के ऊपर तैरते बादल और दूर से सुनाई देती पक्षियों की आवाजें वातावरण को एक अलग ही शांति देती हैं।बारिश के मौसम में जशपुर और भी खूबसूरत हो उठता है। पहाड़ों पर हरियाली की चादर बिछ जाती है और जगह-जगह छोटे-बड़े झरने जीवंत हो उठते हैं। रास्ते में बहते पानी की धाराएं, मिट्टी की सोंधी खुशबू और पेड़ों से टपकती बारिश—मानो प्रकृति खुद अपने सबसे सुंदर रूप में पर्यटकों का स्वागत कर रही हो।

कैलाश गुफा में प्रकृति और अध्यात्म

जशपुर की खूबसूरती केवल प्राकृतिक नहीं है। यहां प्रकृति और आध्यात्मिकता का गहरा रिश्ता दिखाई देता है।बगीचा विकासखंड में स्थितकैलाश गुफाघने जंगल के बीच बनी प्राकृतिक गुफा है। यहां भगवान शिव का मंदिर और संत गहिरा गुरु का आश्रम भी स्थित है।गुफा तक पहुंचने का रास्ता अपने आप में एक अनुभव है। चारों तरफ जंगल, शांत वातावरण और भीतर मौजूद आध्यात्मिक ऊर्जा मन को सहज ही ठहरने पर मजबूर करती है।यहां आकर लगता है कि हमारे पूर्वजों ने धार्मिक स्थलों के लिए ऐसे ही प्राकृतिक स्थान क्यों चुने होंगे– जहां प्रकृति स्वयं ध्यान का वातावरण तैयार करती है।

राजपुरी : झरने के साथ एक मुलाकात

बगीचा क्षेत्र काराजपुरी जलप्रपातभी जशपुर की प्राकृतिक सुंदरता का महत्वपूर्ण हिस्सा है। पहाड़ियों और हरियाली के बीच बहता पानी यहां आने वाले पर्यटकों को कुछ देर के लिए रोजमर्रा की जिंदगी से अलग कर देता है।जशपुर के जलप्रपातों की खूबसूरती यह है कि यहां पर्यटन केवल देखने तक सीमित नहीं रहता। प्रकृति के साथ समय बिताना अपने आप में यात्रा का हिस्सा बन जाता है।

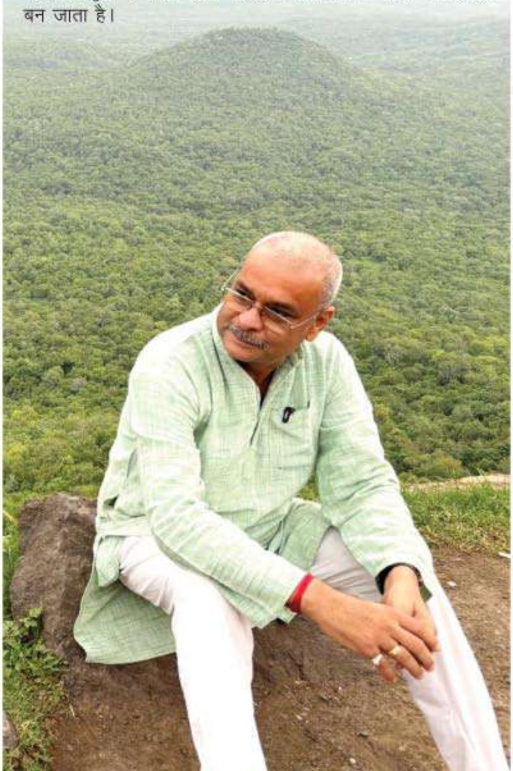

रानीदाह- जंगल के बीच गिरता पानी

जशपुर मुख्यालय से करीब 15 किलोमीटर दूररानीदाह जलप्रपातहमारी यात्रा के महत्वपूर्ण पड़ावों में से एक है। घने जंगल और हरी पहाड़ियों के बीच गिरता जलप्रपात बारिश में अपने पूरे वेग के साथ दिखाई देता है।झरने के आसपास का वातावरण ऐसा है कि कुछ देर वहां बैठकर सिर्फ पानी की आवाज सुनते रहने का मन करता है। यहां प्रकृति किसी तस्वीर की तरह स्थिर नहीं, बल्कि लगातार गतिशील दिखाई देती है।

मयाली नेचर कैंपः प्रकृति के साथ रोमांच

अगर यात्रा में प्रकृति के साथ थोड़ा रोमांच भी चाहिए तोमयाली नेचर कैंपएक शानदार पड़ाव है। कुनकुरी क्षेत्र में स्थित यह स्थान प्राकृतिक सुंदरता के साथ एडवेंचर गतिविधियों के लिए भी आकर्षण का केंद्र बन रहा है। यहां बोटिंग का अनुभव यात्रा में एक अलग रंग भर देता है। पानी, पहाड़ और हरियाली के बीच नाव पर बैठकर आसपास के दृश्य देखने का अनुभव लंबे समय तक याद रहता है।

मधेश्वर पहाड़- प्रकृति का अद्भुत आकार

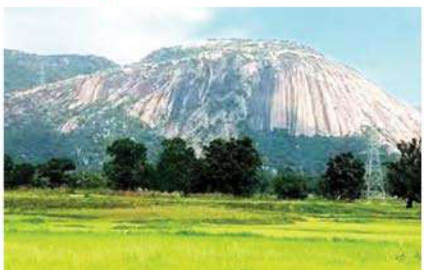

जशपुर की यात्रा मेंमधेश्वर पहाड़एक ऐसा स्थल है जहां प्रकृति और आस्था एक-दूसरे में घुली हुई दिखाई देती हैं।कुनकुरी क्षेत्र में स्थित यह विशाल प्राकृतिक पर्वत शिवलिंग के आकार का दिखाई देता है। इसे विश्व के सबसे बड़े प्राकृतिक शिवलिंग के रूप में गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किए जाने का उल्लेख मिलता है।यहां पहुंचकर पहाड़ के विशाल आकार को देखना अपने आप में एक रोमांचक अनुभव है। प्रकृति ने यहां जिस आकृति को जन्म दिया है, उसे स्थानीय धार्मिक आस्था ने एक पवित्र अर्थ दिया है।

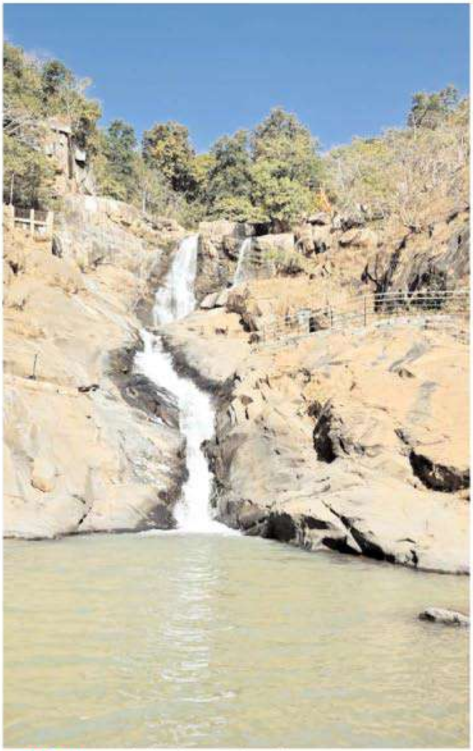

में भी दिखाई देती है। ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए जिले में होमस्टे विकसित किए गए हैं। स्थानीय ग्रामीणों को आतिथ्य प्रबंधन और पर्यटक सेवाओं का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसका महत्व इसलिए भी है क्योंकि इससे पर्यटक किसी होटल में ठहरने के बजाय स्थानीय परिवारों के बीच रहकर ग्रामीण जीवन को समझ सकता है।

केरे गांव को ग्रामीण पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने की पहल इसी दिशा में महत्वपूर्ण है। यहां पर्यटक स्थानीय संस्कृति, खान-पान, परंपराओं और जीवनशैली से सीधे परिचित हो सकते हैं।यही वह पर्यटन है जिसमें पर्यटक केवल पैसा खर्च करके वापस नहीं जाता, बल्कि उसका खर्च सीधे स्थानीय अर्थव्यवस्था तक पहुंचता है।

जशपुर से लौटते हुए...

जशपुर की यात्रा खत्म होती है, लेकिन जशपुर आसानी से खत्म नहीं होता।वह कभी झरने की आवाज बनकर याद आता है, कभी साल के जंगलों से आती हवा में, कभी पहाड़ी रास्तों पर छाए बादलों में और कभी किसी गांव के शांत आंगन में।यहां पर्यटन केवल प्रकृति देखने का माध्यम नहीं है। यह स्थानीय संस्कृति से जुड़ने, ग्रामीण जीवन को समझने और प्रकृति के साथ कुछ समय बिताने का अवसर भी है।आज जब छत्तीसगढ़ में ग्रामीण पर्यटन और स्थानीय आजीविका को मजबूत करने की दिशा में प्रयास बढ़ रहे हैं, जशपुर एक ऐसी संभावना के रूप में सामने आता है जहांपर्यटन और स्थानीय विकास साथ-साथ चल सकते हैं।

जशपुर की सबसे बड़ी खूबसूरती शायद यही है कि यहां प्रकृति पर्यटक को आकर्षित करती है, लेकिनलोग, संस्कृति और मिट्टी उसे वापस आने के लिए मजबूर करते हैं।शहर लौटते समय मन में एक ही बात आती है—कुछ यात्राएं तस्वीरों में नहीं रहतीं, वे भीतर बस जाती हैं।जशपुर ऐसी ही एक यात्रा है।

कोतेबिरा- चट्टानों के बीच बहती शांति

फरसाबहार क्षेत्र में ईब नदी के किनारे स्थितकोतेबिराजशपुर की उन जगहों में से है जहां प्रकृति का स्वरूप कुछ अलग दिखाई देता है।विशाल प्राकृतिक चट्टानें, शांत नदी और आसपास की पहाड़ियां इस जगह को विशेष बनाती हैं। यहां कुछ देर बैठकर नदी की ओर देखना ऐसा अनुभव देता है मानो समय की गति थोड़ी धीमी हो गई हो।

खुड़िया रानी गुफा- इतिहास के निशान

बगीचा क्षेत्र कीखुड़िया रानी गुफाजशपुर की प्राकृतिक सुंदरता के साथ उसके ऐतिहासिक और पुरातात्विक पक्ष से भी परिचय कराती है।ऐसी जगहें बताती हैं कि जशपुर केवल पर्यटन का भूगोल नहीं है। इसकी मिट्टी में इतिहास, लोककथाएं, आस्था और आदिवासी संस्कृति की कई परतें छिपी हैं।

जशपुर की असली खूबसूरती गांवों में

जशपुर को केवल जलप्रपातों और पहाड़ों से समझना अधूरा होगा। इस जिले की असली पहचान उसके गांवों और वहां की जीवनशैली

बारूद की धरती पर किताबों की रोशनी

जहां कभी गोलियों की गूंज थी, आज वहीं बच्चों के हाथों में किताबें हैं

चिंतलनार के शिक्षक तोकल पदमा राव की कहानी

विशेष स्पेशल स्टोरी- के.शंकर, बस्तर

यह कहानी सिर्फ एक शिक्षक की कहानी नहीं है। यह उस बदलाव की कहानी है, जिसमें बंदूक की आवाज को किताबों की आवाज चुनौती दे रही है। 12 किलोमीटर पैदल चलकर पढ़ने वाला एक बच्चा आज उसी इलाके के बच्चों का भविष्य गढ़ रहा है।

एक समय था.. जब दंडकारण्य के इन जंगलों का नाम सुनते ही जेहन में बंदूक, बारूद, भय और संघर्ष की तस्वीर उभर आती थी। रास्तों पर सन्नाटा होता था और जंगलों के बीच से गुजरना किसी चुनौती से कम नहीं था। माओवादी गतिविधियों से प्रभावित इस इलाके में विकास की रफ्तार लंबे समय तक हिंसा और असुरक्षा की छाया में रही। लेकिन किसी भी धरती की पहचान केवल उसके अतीत से तय नहीं होती।

समय बदला है। परिस्थितियां बदली हैं। और अब इन्हीं जंगलों के बीच एक दूसरी आवाज सुनाई दे रही है—बच्चों की आवाज। स्कूल जाते कदमों की आहट। किताबों के पन्ने पलटने की आवाज। सपनों की भाषा।

सुकमा जिले के चिंतलनार की कहानी इसी बदलाव की कहानी है। और इस कहानी के केंद्र में हैं—तोकल पदमा राव। एक शिक्षक, जिसने शिक्षा को नौकरी नहीं, बल्कि अपने समाज और आने वाली पीढ़ी के प्रति जिम्मेदारी माना।

आज वे जिस माता रुक्मणी स्कूल में बच्चों को पढ़ाते हैं, कभी उसी स्कूल में खुद विद्यार्थी बनकर बैठा करते थे फर्क सिर्फ इतना है कि तब उनके हाथ में किताब थी और आंखों में आगे बढ़ने का सपना। आज उनके हाथ में वही किताब है, लेकिन अब वह किताब उनके साथ सैकड़ों बच्चों के सपनों की जिम्मेदारी भी लेकर चलती है।

12 किलोमीटर का रास्ता, जिसने जीवन की दिशा बदल दी

पदमा राव का बचपन किसी सुविधा संपन्न शहर के बच्चे जैसा नहीं था। परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर थी। रोजमर्रा की जरूरतें पूरी करना ही संघर्ष था। लेकिन पढ़ने की इच्छा इतनी मजबूत थी कि कठिनाइयां भी उनके कदम नहीं रोक सकीं। स्कूल पहुंचने के लिए उन्हें चिंतलनार से जगरगुंडा तक करीब 12 किलोमीटर का रास्ता पैदल तय करना पड़ता था।

घने जंगलों से गुजरता यह रास्ता सिर्फ दूरी नहीं था। गर्मी, बारिश, जंगल का सन्नाटा और क्षेत्र की कठिन परिस्थितियां—हर दिन उनके सामने एक नई चुनौती होती थी। लेकिन वे चलते रहे। शायद तब उन्हें भी नहीं पता था कि यही 12 किलोमीटर आगे चलकर उनके जीवन की सबसे बड़ी सीख बन जाएंगे।

- **12 किमी – कभी स्कूल पहुंचने के लिए पैदल सफर**
- **16 साल – शिक्षक के रूप में सेवा**
- **2 विद्यार्थी – नवोदय चयन परीक्षा में सफलता**
- **1 शिक्षक – शिक्षा को बदलाव का माध्यम बनाने का संकल्प**

उन्होंने जाना कि मंजिल दूर हो सकती है, रास्ता कठिन हो सकता है, लेकिन अगर कदम चलते रहें तो कोई दूरी असंभव नहीं होती। आज जब वे किसी बच्चे को पढ़ाई से दूर देखते हैं, तो केवल शिक्षक के रूप में उसे समझाते नहीं हैं। वे अपने जीवन का अनुभव उसके सामने रखते हैं। क्योंकि उन्होंने शिक्षा को सिर्फ पढ़ा नहीं है—उन्होंने उसे जिया है।

जब शिक्षा स्कूल की चारदीवारी से बाहर निकलती है

पदमा राव का मानना है कि शिक्षा केवल स्कूल की इमारत के भीतर नहीं हो सकती।

जिस स्कूल में विद्यार्थी बने, वहीं शिक्षक बन गए

समय बीता। पदमा राव ने अपनी शिक्षा पूरी की और शिक्षक बने। उनके सामने बेहतर अवसरों के रास्ते खुले होंगे, लेकिन उन्होंने अपने क्षेत्र से दूरी नहीं बनाई। उन्होंने उसी इलाके को अपनी कर्मभूमि बनाया, उसी स्कूल को चुना, जहां कभी उन्होंने प्राथमिक शिक्षा हासिल की थी, जहां कभी वे खुद विद्यार्थी बनकर पढ़े थे। जिस स्कूल की ओर कभी वे 12 किलोमीटर पैदल चलकर जाते थे, आज वहीं बच्चों को भविष्य की राह दिखा रहे हैं।

यह महज संयोग नहीं है। यह उस शिक्षक की प्रतिबद्धता है, जिसने अपने अतीत को अपनी जिम्मेदारी में बदल दिया। पिछले 16 वर्षों से शिक्षक के रूप में सेवा दे रहे पदमा राव ने नौकरी को केवल वेतन और पद तक सीमित नहीं रखा। उनके लिए शिक्षक होना मतलब था-उन बच्चों तक पहुंचना, जिनके लिए स्कूल तक पहुंचना ही कभी सबसे बड़ी चुनौती था।

इमारत जर्जर हुई, लेकिन सपने नहीं

चिंतलनार में स्थिति माता रुक्मणी स्कूल भवन जर्जर हुआ दीवारें कमजोर हुईं भवन की हालत बिगड़ती गई। एक समय ऐसा आया जब यह इमारत लगभग खंडहर में तब्दील हो गई लेकिन...दीवारें टूट सकती थीं, बच्चों के सपने नहीं। पदमा राव ने वैकल्पिक व्यवस्था के जरिए बच्चों की पढ़ाई जारी रखी संसाधनों की कमी थी। सुविधाएं सीमित थीं। लेकिन शिक्षा का सिलसिला नहीं रुका। यही इस कहानी की सबसे बड़ी ताकत है। यह तस्वीर बताती है कि संसाधनों की कमी चुनौती जरूर हो सकती है, लेकिन अगर इच्छाशक्ति मजबूत हो तो शिक्षा की राह पूरी तरह बंद नहीं होती।

अगर बच्चा स्कूल तक नहीं पहुंच पा रहा है, तो शिक्षक को उसके घर तक जाना होगा। इसी सोच के साथ वे अंदरूनी इलाकों में जाते हैं। अभिभावकों से मिलते हैं। बच्चों को स्कूल भेजने के लिए प्रेरित करते हैं। शिक्षा से दूर हो चुके बच्चों को दोबारा पढ़ाई से जोड़ने का प्रयास करते हैं। कई बार वे उन्हीं रास्तों से गुजरते हैं, जिन पर कभी उनका अपना बचपन चला था। फर्क सिर्फ इतना है— तब वे अपने भविष्य के लिए चल रहे थे, आज दूसरों के भविष्य के लिए चल रहे हैं।

%शिक्षार्थ% ने जोड़ी सीखने की नई कड़ी

इस शिक्षा यात्रा में %शिक्षार्थ% का सहयोग भी महत्वपूर्ण रहा है। बीते तीन वर्षों से माता रुक्मणी स्कूल में बच्चों को स्वतंत्र रूप से सीखने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से सेल्फ-लर्निंग किट और इंटरैक्टिव लाइब्रेरी कॉर्नर जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई गईं।

इन प्रयासों ने बच्चों के सामने सीखने के नए अवसर खोले। किताब अब केवल पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं रही, बल्कि बच्चों के लिए खोजने, समझने और खुद सीखने का माध्यम बनने लगी। जहां कभी संसाधनों की कमी बड़ी चुनौती थी, वहां अब बच्चों के सामने सीखने के कुछ नए साधन भी हैं।

और फिर आई वह खबर... जिसने सबको गर्व से भर दिया वर्षों की मेहनत का परिणाम आखिरकार सामने आया। फिर एक दिन वर्षों की मेहनत का परिणाम सामने आया। चिंतलनार क्षेत्र के दो स्थानीय विद्यार्थियों—हेमला हाड़मा, ग्राम किस्टाराम और कड़ती समैया, ग्राम मोरपल्ली—ने जवाहर नवोदय विद्यालय चयन परीक्षा उत्तीर्ण की। आज दोनों विद्यार्थी सुकमा जिले के कोंटा विकासखंड स्थित पेंटा जवाहर नवोदय विद्यालय में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। यह सफलता सिर्फ दो बच्चों के चयन की खबर नहीं है। यह उस पूरे इलाके के लिए उम्मीद की खबर है। क्योंकि यह साबित करती है कि

जंगल और दूरदराज का इलाका किसी बच्चे के सपनों की सीमा नहीं है। सही मार्गदर्शन मिले, अवसर मिले और बच्चा मेहनत करे तो वह प्रतियोगी परीक्षा में सफल होकर अपने लिए एक नई दुनिया का दरवाजा खोल सकता है।

चिंतलनार की बदलती पहचान

कभी चिंतलनार और आसपास के इलाकों की खबरें संघर्ष और भय से जुड़ी होती थीं। आज उसी क्षेत्र से शिक्षा और सफलता की खबरें सामने आ रही हैं। यह बदलाव रातोंरात नहीं आया। इसके पीछे उन शिक्षकों की मेहनत है, जिन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी बच्चों का साथ नहीं छोड़ा। उन अभिभावकों का भरोसा है, जिन्होंने बच्चों को स्कूल भेजना शुरू किया। उन संस्थाओं का सहयोग है, जिन्होंने संसाधन उपलब्ध कराए। और सबसे महत्वपूर्ण—उन बच्चों की मेहनत है, जिन्होंने परिस्थितियों को अपनी मंजिल नहीं बनने दिया।

एक शिक्षक, जो खुद अपनी पाठ्यपुस्तक है

पदमा राव की कहानी की सबसे बड़ी खूबसूरती शायद यही है कि वे बच्चों को वही सिखाते हैं, जिसे उन्होंने स्वयं जिया है। उन्होंने गरीबी देखी है। उन्होंने लंबी दूरी तय की है। उन्होंने कठिन परिस्थितियों का सामना किया है। लेकिन उन्होंने पढ़ाई नहीं छोड़ी। आज वही अनुभव उनकी सबसे बड़ी ताकत है। उनका जीवन बच्चों से कहता है— मुश्किलें रास्ते का हिस्सा हैं, मंजिल नहीं। एक ऐसा बच्चा, जो कभी 12 किलोमीटर पैदल चलकर स्कूल पहुंचता था, आज उसी इलाके के बच्चों के लिए रास्ते बना रहा है।

बारूद से किताब तक

चिंतलनार की कहानी हमें यह सोचने के लिए मजबूर करती है कि किसी क्षेत्र की पहचान आखिर तय कौन करता है?क्या उसका अतीत? क्या उसकी भौगोलिक परिस्थितियां? या फिर उसकी नई पीढ़ी? चिंतलनार की कहानी सिर्फ एक गांव की कहानी नहीं है। यह बदलाव की कहानी है। यह बताती है कि किसी क्षेत्र की पहचान हमेशा उसके अतीत से तय नहीं होती। एक नई पीढ़ी उस पहचान को बदल सकती है। जहां कभी डर था, वहां अब सपने हैं जहां कभी बंदूक की चर्चा होती थी, वहां अब किताबों की चर्चा है।

जहां कभी बच्चे परिस्थितियों के सामने बेबस थे, वहां अब वे प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं। और इस बदलाव के बीच पदमा राव जैसे शिक्षक खड़े हैं। न किसी बड़े मंच पर...न किसी बड़े दावे के साथ...बल्कि एक छोटे से स्कूल में बच्चों के बीच।

चिंतलनार का जवाब दे रहा है—नई पीढ़ी अपना भविष्य खुद लिख सकती है। जहां कभी बंदूक की आवाज चर्चा का विषय थी, वहां अब किताबों की चर्चा हो रही है। जहां कभी बच्चों के सामने अवसरों की कमी थी, वहां अब नवोदय जैसी परीक्षाओं के सपने दिखाई दे रहे हैं। और इस परिवर्तन के बीच पदमा राव जैसे शिक्षक खड़े हैं। बिना किसी बड़े मंच के। बिना किसी बड़े दावे के। बस बच्चों के बीच।

कहानी अभी बाकी है...

हेमला हाड़मा और कड़ती समैया की सफलता इस कहानी का अंत नहीं है। बल्कि यह शुरुआत है। आज दो बच्चे नवोदय विद्यालय पहुंचे हैं। कल इसी क्षेत्र से और बच्चे निकल सकते हैं। कोई डॉक्टर बनेगा। कोई इंजीनियर। कोई शिक्षक। कोई

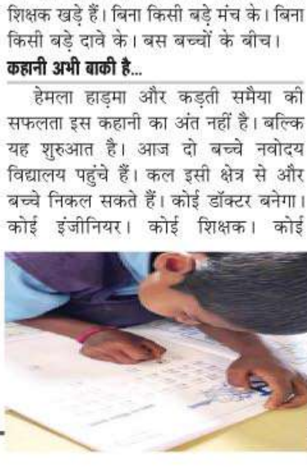

चिंतलनार क्षेत्र के हेमला हाड़मा और कड़ती समैया ने जवाहर नवोदय विद्यालय चयन परीक्षा में सफलता हासिल कर नई उम्मीद जगाई।

अधिकारी। और शायद आने वाले वर्षों में इन्हीं बच्चों में से कोई अपने गांव लौटेगा और अगली पीढ़ी के किसी बच्चे का हाथ पकड़कर कहेगा—'पढ़ो... क्योंकि तुम्हारी किताब तुम्हारा भविष्य बदल सकती है।' यही शिक्षा की असली ताकत है।

एक शिक्षक एक बच्चे को पढ़ाता है, लेकिन एक शिक्षित बच्चा आगे चलकर कई जिंदगियों की दिशा बदल सकता है। चिंतलनार में आज यही परिवर्तन दिखाई दे रहा है। एक समय था, जब इन जंगलों में गोलियों की आवाज गूंजती थी। आज उन्हीं जंगलों के बीच बच्चों की आवाज सुनाई देती है— 'सर, हमें और पढ़ना है...'

शायद यही चिंतलनार के बदलते कल की सबसे खूबसूरत पहचान है। क्योंकि बंदूक डर पैदा कर सकती है... लेकिन किताब भविष्य बनाती है। और उस भविष्य की नींव रखने वालों में एक नाम है—तोकल पदमा राव।

बारूद की धरती पर किताबों की यह रोशनी अभी छोटी है। लेकिन इतिहास गवाह है—बड़ी सुबह की शुरुआत अक्सर एक छोटी-सी रोशनी से ही होती है।

चाहती क्या है Gen Z

Sex, Love या सिर्फ़ Pleasure?

युवा पीढ़ी के सामने सवाल यह नहीं होना चाहिए कि—"Sex सही है या गलत?'सवाल इससे ज्यादा गहरा है—'क्या मैं अपने शरीर, अपनी भावनाओं और सामने वाले व्यक्ति के प्रति जिम्मेदार हूं?' क्या हमारे बीच Consent है? क्या Trust है? क्या हम Boundaries का सम्मान करते हैं? क्या हम एक-दूसरे को केवल अपनी जरूरत पूरी करने का माध्यम तो नहीं बना रहे?

आज की Gen Z से यदि सिर्फ एक सवाल पूछा जाए—

'तुम आखिर खोज क्या रहे हो—Pleasure या Peace?'

सवाल छोटा है, लेकिन इसके भीतर आज की पूरी पीढ़ी की एक बड़ी उलझन छिपी है।

हम ऐसे दौर में जी रहे हैं जहां हर चीज Instant है। एक क्लिक में खाना, एक Swipe में मनोरंजन, एक App पर नया दोस्त और कुछ ही मिनटों में किसी नए व्यक्ति से बातचीत। सोशल मीडिया ने हमारे सामने विकल्पों की दुनिया खोल दी है, लेकिन इसी के साथ एक नया सवाल भी पैदा हुआ है—क्या विकल्प बढ़ने से रिश्ते बेहतर हुए हैं? आज युवा अधिक Connected दिखाई देते हैं, लेकिन क्या वे वास्तव में Emotionally Connected भी हैं? यहीं से Sex, Attraction, Love, Intimacy और आनंद के बीच का अंतर समझना जरूरी हो जाता है।

संभोग मानव जीवन और प्रकृति का स्वाभाविक हिस्सा है। इसे केवल अपराध, शर्म या नैतिक दोष के रूप में देखना स्वस्थ दृष्टिकोण नहीं है। लेकिन दूसरी तरफ संभोग को प्रेम, Intimacy या भावनात्मक जुड़ाव का पर्याय मान लेना भी सही नहीं। Physical intimacy और Emotional intimacy अलग-अलग अनुभव हैं।किसी के साथ शारीरिक रूप से करीब आना अपेक्षाकृत आसान हो सकता है, लेकिन क्या हम उसके सामने अपनी कमजोरी, डर, असुरक्षा और आंसू भी रख सकते हैं? यही वास्तविक Intimacy की परीक्षा है।वासना पूछ सकती है—'मुझे क्या मिलेगा?' प्रेम पूछता है—'मैं इस व्यक्ति को कितना सम्मान और सुरक्षा दे सकता हूं?' आकर्षण आंखों से शुरू हो सकता है, लेकिन प्रेम व्यक्ति को उसके पूरे अस्तित्व के साथ स्वीकार करने की यात्रा है।

Swipe Culture और रिश्तों की नई चुनौती

Dating Apps ने लोगों को मिलने के नए अवसर दिए हैं। यह अपने आप में न अच्छा है, न बुरा। समस्या तब शुरू होती है जब रिश्ते भी Shopping Experience की तरह देखे जाने

लगते हैं। एक Profile पसंद नहीं आई—Swipe Left। दूसरा विकल्प मिल गया—अगला Swipe। यह लगातार उपलब्ध विकल्प हमारे मन में यह धारणा पैदा कर सकते हैं कि शायद इससे बेहतर कोई और व्यक्ति हमेशा मौजूद है। नतीजा यह हो सकता है कि हम किसी व्यक्ति कोसमझने से पहले उसे Replace करने लगें। रिश्ते में थोड़ी असहमति आई तो बातचीत करने के बजाय नया विकल्प तलाशना आसान लग सकता है। लेकिन प्रेम का निर्माण विकल्पों की संख्या से नहीं, समय, संवाद और विश्वाससे होता है।

आज प्रेम केवल दो लोगों के बीच का निजी अनुभव नहीं रह गया है। कई बार वह Social Media पर दिखाई देने वाली एक Public Identity भी बन जाता है। Couple Photos, Relationship Status, Likes, Comments और Followers—इन सबके बीच एक नया सवाल पैदा होता है- क्या हम रिश्ते को जी रहे हैं या उसे दिखा रहे हैं? सोशल मिडिया लगातार हमें दूसरों के जीवन का Edited Version दिखाता है। किसी की Perfect Date, किसी की Romantic Trip और किसी की Happy Relationship देखकर हम अपने जीवन की तुलना उससे करने लगते हैं। इस तुलना से FOMO—Fear of Missing Out—बढ़ सकता है।और जब बाहरी Validation हमारी आत्म-मूल्य की भावना को नियंत्रित करने लगे, तब प्रेम धीरे-धीरे आवश्यकता बन सकता है।स्वस्थ रिश्ता वह नहीं जिसमें दुनिया को साबित करना पड़े कि हम खुश हैं। स्वस्थ रिश्ता वह है जिसमें दो लोग बिना दुनिया की स्वीकृति के भी एक-दूसरे के साथ सहज रह सकें।

प्रेम की पहली शर्त

आधुनिक रिश्तों में एक शब्द को गंभीरता से समझना बेहद जरूरी है—Consent यानी सहमति। Consent केवल 'हाँ' सुन लेना नहीं है। यह स्पष्ट, स्वतंत्र और बिना दबाव की सहमति है। किसी भी शारीरिक या अंतरंग संबंध में दोनों व्यक्तियों की इच्छा, सीमाओं और सहजता का सम्मान आवश्यक है।किसी रिश्ते में होना किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति के शरीर पर अधिकार नहीं देता। प्रेम में अधिकार से ज्यादा सम्मान होता है। इसलिए किसी भी अंतरंग संबंध से पहले यह समझना जरूरी है कि सामने वाला व्यक्ति वास्तव में सहज और इच्छुक है या नहीं। और यह भी कि उसकी सहमति किसी भी समय बदली जा सकती है। यही समझ शारीरिक संबंध को केवल इच्छा से उठाकरजिम्मेदारीके स्तर तक ले जाती है।

रिश्ते और भीतर का अकेलापन

आज मानसिक स्वास्थ्य पर चर्चा बढ़ी है और रिश्तों को इससे अलग करके नहीं देखा जा सकता। कई युवा अकेलेपन से बचने के लिए Relationship में जाते हैं। किसी का Attention उन्हें अपने बारे में अच्छा महसूस कराता है। किसी का लगातार Message उन्हें यह एहसास देता है कि वे महत्वपूर्ण हैं।लेकिन यदि पूरा Emotional Balance किसी दूसरे व्यक्ति के व्यवहार पर निर्भर हो जाए, तो रिश्ता प्रेम से ज्यादा Dependency बन सकता है। Breakup तब केवल एक रिश्ता खत्म होना नहीं रहता, बल्कि व्यक्ति को लगता हैकि उसकी पहचान, सुरक्षा और आत्म-मूल्य भी समाप्त हो गया। इसलिए स्वस्थ प्रेम की शुरुआत केवल दूसरे व्यक्ति को खोजने से नहीं होती। वह स्वयं को समझने से शुरू होती है। अपने अकेलेपन को समझना, अपनी भावनाओं को स्वीकार करना और स्वयं के साथ सहज होना—ये स्वस्थ रिश्ते की महत्वपूर्ण नींव हैं।

भारतीय दर्शन में काम और प्रेम

यहां भारतीय दर्शन हमें एक महत्वपूर्ण दृष्टि दे सकता है। भारतीय चिंतन मेंकामको जीवन के चार पुरुषार्थों—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—में स्थान दिया गया है। इसका अर्थ यह नहीं कि हर इच्छा को बिना विचार के पूरा किया जाए। बल्कि व्यापक भारतीय दृष्टि में जीवन की इच्छाओं को धर्म और विवेक के साथ संतुलितकरने की बात दिखाई देती है। यानी कामना जीवन का शत्रु नहीं है। समस्या तब होती है जब मनुष्य स्वयं अपनी कामनाओं का स्वामी न रहकर उनका गुलाम बन जाता है। इसीलिए भारतीय दर्शन मेंसंयमका अर्थ केवल दमन नहीं है। संयम का अर्थ है—इच्छा को समझना, उसके प्रभाव को देखना और जागरूक होकर निर्णय लेना। यह दृष्टि आज की डिजिटल दुनिया में और भी महत्वपूर्ण हो जाती है, जहां हर क्षण हमारा ध्यान किसी न किसी उत्तेजना की ओर खींचा जा रहा है।

Pleasure और आनंद में अंतर

हम अक्सर Pleasure को ही Happiness और आनंद समझ लेते हैं। लेकिन दोनों अलग हैं। एक स्वादिष्ट भोजन Pleasure दे सकता है। एक Romantic Moment Pleasure दे सकता है। एक शारीरिक संबंध Pleasure दे सकता है। एक Reel भी कुछ क्षणों का मनोरंजन दे सकती है। लेकिन इन अनुभवों के समाप्त होने के बाद मन फिर उसी शांति की तलाश करता है। यहीं Pleasure और Peace का अंतर सामने आता है। Pleasure उत्तेजना दे सकता है। Peace भीतर की स्थिरता से पैदा होती है। आनंद तब गहरा होता है जब व्यक्ति को स्वयं से लगातार भागने की आवश्यकता नहीं रहती।

किसी को पाना प्रेम नहीं

शायद प्रेम की सबसे खूबसूरत परिभाषा यही हो सकती है कि प्रेम किसी व्यक्ति को अपना बनाने से अधिक उसेस्वयं होने की स्वतंत्रता देनाहै।प्रेम का अर्थ यह नहीं कि सामने वाला हमारे अनुसार बदले।प्रेम का अर्थ है कि हम उसकी स्वतंत्रता, सीमाओं, विचारों और अस्तित्व का सम्मान करें।एक स्वस्थ रिश्ता दो अधूरे लोगों द्वारा एक-दूसरे को पूरा करने की कोशिश नहीं, बल्कि दो पूर्ण व्यक्तियों का साथ हो सकता है—जहां दोनों एक-दूसरे के विकास में सहयोगी बनें।

इसलिए युवा पीढ़ी के सामने सवाल यह नहीं होना चाहिए कि—'Sex सही है या गलत?' सवाल इससे ज्यादा गहरा है—'क्या मैं अपने शरीर, अपनी भावनाओं और सामने वाले व्यक्ति के प्रति जिम्मेदार हूं?' क्या हमारे बीच Consent है? क्या Trust है? क्या हम Boundaries का सम्मान करते हैं?क्या हम एक-दूसरे को केवल अपनी जरूरत पूरी करने का माध्यम तो नहीं बना रहे? और सबसे महत्वपूर्ण—क्या इस रिश्ते के बाद हम दोनों भीतर से बेहतर इंसान बन रहे हैं? क्योंकि वासना आपको किसी के शरीर के करीब ला सकती है। आकर्षण आपको किसी व्यक्ति की ओर खींच सकता है। संभोग आपको शारीरिक आनंद दे सकता है। लेकिन प्रेम ही वह अनुभव है जो दो मनुष्यों को एक-दूसरे के अस्तित्व का सम्मान करना सिखाता है। और शायद यही वह बिंदु है जहां Pleasure धीरे-धीरे Peace में बदलने लगता है।

सच्चा आनंद केवल शरीर की उत्तेजना में नहीं, बल्कि मन की शांति, रिश्ते की गरिमा और चेतना की जागरूकता में जन्म लेता है। यही है—Pleasure से Peace तक की यात्रा।

Crime and Criminality

डॉ. शुभ्रा सान्याल की पुस्तक पर एक समीक्षा

■ डॉ.नरेन्द्र पाण्डेय

डॉ. शुभ्रा सान्याल

अपराध हमारे समाज का ऐसा विषय है, जिसे हम अक्सर घटना के बाद देखते हैं। अपराध हुआ, पुलिस पहुंची, आरोपी पकड़ा गया, अदालत में मामला गया और फिर हमारा ध्यान किसी दूसरी खबर की ओर चला जाता है। लेकिन अपराध की कहानी इतनी सरल नहीं होती। अपराध के पीछे एक व्यक्ति होता है, उसका मन होता है, उसका परिवार होता है, उसका सामाजिक परिवेश होता है और कई बार ऐसी परिस्थितियां होती हैं, जिन्हें समझे बिना अपराध की पूरी तस्वीर सामने नहीं आती।

डॉ. शुभ्रा सान्याल की पुस्तक Crime and Criminality: A Mirror to the Criminal World इसी जटिल दुनिया को समझने का प्रयास करती है। पुस्तक अपराध को केवल कानून या दंड के नजरिए से नहीं देखती, बल्कि criminology, psychology, sociology, victimology और correctional studies जैसे विभिन्न आयामों को साथ लेकर अपराध के कारणों, उसके स्वरूप और उसके परिणामों को समझने की कोशिश करती है।

डॉ. शुभ्रा सान्याल जी से मेरा जुड़ाव पिछले लगभग पांच वर्षों से है। इस दौरान कई ऑनलाइन कार्यक्रमों में उनके साथ संवाद और चर्चा करने का अवसर मिला। अपराध, Criminal Psychology, किशोर अपराध, सुधार और समाज की भूमिका जैसे विषयों पर उनसे बातचीत करते हुए मैंने महसूस किया कि उनकी दृष्टि अपराध को केवल 'अपराध' के रूप में देखने की नहीं, बल्कि उसके पीछे के मनुष्य को समझने की है। इसलिए जब उनकी यह पुस्तक पढ़ी तो मेरे लिए यह केवल एक पुस्तक समीक्षा का विषय नहीं रहा, बल्कि उन वर्षों के संवादों को एक व्यवस्थित रूप में देखने का अवसर भी बना।

अपराध हुआ क्यों?

इस पुस्तक का सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न मुझे यही लगता है—अपराध हुआ क्यों?

हम अक्सर पूछते हैं—अपराध किसने किया? उसे कितनी सजा मिलनी चाहिए? ये प्रश्न अपनी जगह बिल्कुल आवश्यक हैं। लेकिन यदि हम अपराध को रोकना चाहते हैं, तो हमें यह भी पूछना होगा कि उस व्यक्ति के व्यवहार के पीछे कौन-सी परिस्थितियां थीं।

पुस्तक बताती है कि आपराधिक व्यवहार के पीछे मनोवैज्ञानिक संघर्ष, प्रतिकूल सामाजिक वातावरण और सामाजिक असमानताएं जैसे कई कारक भूमिका निभा सकते हैं। साथ ही समय पर हस्तक्षेप, काउंसलिंग और समुदाय की भागीदारी को अपराध की रोकथाम और सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण माना गया है।

यहां एक बात बहुत स्पष्ट है—अपराध को समझना, अपराध का समर्थन करना नहीं है।

अपराधी को उसके अपराध के लिए जवाबदेह होना ही चाहिए। पीड़ित को न्याय मिलना चाहिए। कानून का पालन होना चाहिए। लेकिन यदि हम केवल सजा पर रुक जाते हैं और अपराध की जड़ों को नहीं समझते, तो शायद हम अगले अपराध को रोकने की दिशा में बहुत आगे नहीं बढ़ पाएंगे।

अपराधी के पीछे का मनुष्य

पुस्तक की एक बड़ी विशेषता इसका मानवीय दृष्टिकोण है। अपराधी को केवल एक 'अपराधी' मानकर समाप्त कर देने के बजाय उसके व्यवहार और मानसिकता को समझने की कोशिश की गई है।

डॉ. सान्याल का अपना अनुभव इस दृष्टिकोण को और महत्वपूर्ण बनाता है। पुस्तक के अनुसार उन्होंने 2006 से 2014 तक दिल्ली के Kingsway Camp स्थित Correctional Home में Children in Conflict with Law के साथ काउंसलिंग का कार्य किया। वे वयस्क अपराधियों और उनके rehabilitation के अध्ययन के लिए Jawaharlal Nehru Fellowship की प्राप्तकर्ता भी रही हैं।

यह अनुभव विशेष रूप से किशोर अपराध को समझने में महत्वपूर्ण है। जब कोई बच्चा अपराध करता है तो हमें केवल उसका अपराध नहीं देखना चाहिए। उसके पीछे का बचपन, परिवार, शिक्षा, वातावरण और मानसिक स्थिति भी देखनी चाहिए।

सजा जरूरी है, लेकिन जहां सुधार की संभावना हो, वहां सुधार का अवसर देना भी समाज की जिम्मेदारी है।

अपराध की बदलती दुनिया

पुस्तक की विषय-वस्तु काफी व्यापक है। इसमें Criminal Profiling, Juvenile Delinquency, Crimes against Women, Terrorism, Cyber-crime, Prison Subculture और Offender Rehabilitation जैसे विषय शामिल हैं।

यह विषय-विस्तार बताता है कि अपराध भी समय के साथ बदलता है।

आज Cyber-crime हमारे सामने एक बड़ी चुनौती है। अपराध अब केवल सड़क या घर तक सीमित नहीं रहा। डिजिटल दुनिया ने अपराध के नए तरीके भी पैदा किए हैं। ऐसे में अपराध को समझने के लिए तकनीक के साथ-साथ मानव व्यवहार और मनोविज्ञान को समझना भी आवश्यक हो गया है। यही वजह है कि पुस्तक केवल अपराध की घटनाओं का अध्ययन नहीं करती, बल्कि अपराध की व्यापक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि को सामने लाने का प्रयास करती है।

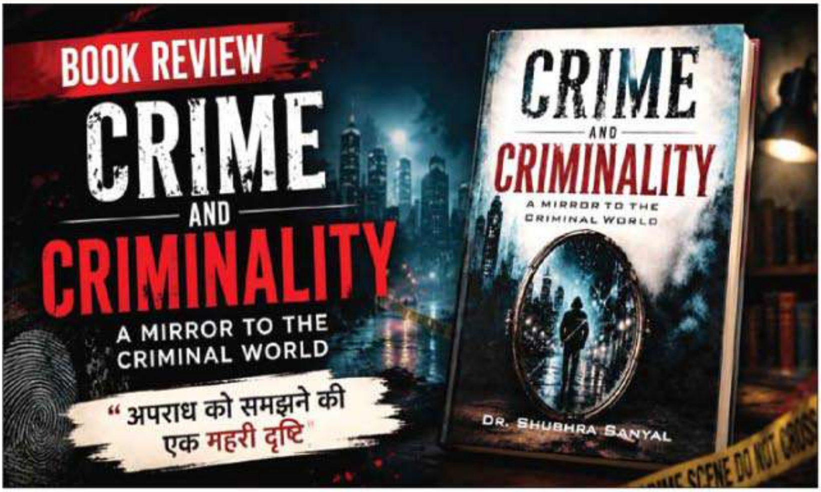

पीड़ित को केंद्र में रखना

अपराध पर चर्चा करते समय एक खतरा यह भी रहता है कि हमारा पूरा ध्यान अपराधी पर चला जाता है और पीड़ित पीछे छूट जाता है।

इस पुस्तक की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह अपराध को सनसनीखेज बनाने के बजाय पीड़ितों की पीड़ा, justice, accountability और rehabilitation के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है।

मेरे विचार से यह दृष्टिकोण आज के मीडिया और सोशल मीडिया के दौर में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

आज अपराध की कोई भी घटना कुछ ही मिनटों में वायरल हो जाती है। वीडियो, तस्वीरें और अधूरी जानकारियां लोगों तक पहुंचती हैं और कई बार न्यायिक प्रक्रिया पूरी होने से पहले ही सोशल मीडिया पर फैसला हो जाता है।

लेकिन पत्रकारिता का काम केवल सनसनी पैदा करना नहीं है। अपराध की सूचना देना जरूरी है, लेकिन उसके पीछे के सामाजिक कारणों को समझाना भी उतना ही जरूरी है।

यह पुस्तक आईना क्यों है?

पुस्तक का उपशीर्षक—A Mirror to the Criminal World—अपने आप में बहुत अर्थपूर्ण है।

आईना चेहरा नहीं बदलता। वह सिर्फ चेहरा दिखाता है। यह पुस्तक भी अपराध की दुनिया को हमारे सामने रखती है और हमें देखने के लिए मजबूर करती है कि अपराध के पीछे कौन-से मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और संस्थागत कारण काम कर सकते हैं।

लेकिन इस आईने में केवल अपराधी का चेहरा दिखाई नहीं देता। इसमें समाज का चेहरा भी दिखाई देता है।

हमारे परिवारों का, हमारी शिक्षा का, हमारी सामाजिक व्यवस्था का, हमारी संस्थाओं का और बदलती डिजिटल दुनिया का।

पिछले पांच वर्षों में डॉ. शुभ्रा सान्याल जी के साथ हुए मेरे संवादों ने मुझे यह समझने में मदद की है कि अपराध पर बात करते समय संवेदना और वैज्ञानिक दृष्टि दोनों आवश्यक हैं। अपराध को लेकर भावनात्मक प्रतिक्रिया स्वाभाविक है, लेकिन समाधान के लिए हमें उससे आगे जाना होगा।

Crime and Criminality: A Mirror to the Criminal World अपराध को एक व्यापक और मानवीय दृष्टि से समझने का प्रयास करती है। यह पुस्तक अपराधी की मानसिकता, अपराध के सामाजिक कारणों, पीड़ित की स्थिति, किशोर अपराध, साइबर अपराध और अपराधियों के पुनर्वास जैसे महत्वपूर्ण विषयों को एक साथ सामने लाती है।

मेरे लिए इस पुस्तक का सबसे महत्वपूर्ण संदेश यही है कि अपराध को केवल दंड के नजरिए से नहीं, रोकथाम और सुधार के नजरिए से भी देखना होगा।

न्याय जरूरी है। जवाबदेही जरूरी है। पीड़ित के प्रति संवेदना जरूरी है। लेकिन अपराध की जड़ों को समझना भी जरूरी है। किसी अपराधी को पकड़ लेना कानून की सफलता हो सकती है, लेकिन अपराध को पैदा होने से रोक देना समाज की बड़ी सफलता होगी।

शायद यही इस पुस्तक की सबसे बड़ी उपलब्धि है कि यह हमें अपराधी को देखने के साथ-साथ अपने समाज को देखने के लिए भी प्रेरित करती है।

अपराध की कहानी केवल अपराधी की कहानी नहीं होती। वह पीड़ित की कहानी भी होती है, परिवार की कहानी भी होती है और उस समाज की कहानी भी होती है, जिसमें अपराध जन्म लेता है।

और इसीलिए Crime and Criminality केवल अपराध की दुनिया का आईना नहीं है—यह कहीं न कहीं हमारे समाज का भी आईना है।

न्याय जरूरी है। जवाबदेही जरूरी है। पीड़ित के प्रति संवेदना जरूरी है। लेकिन अपराध की जड़ों को समझना भी जरूरी है। किसी अपराधी को पकड़ लेना कानून की सफलता हो सकती है, लेकिन अपराध को पैदा होने से रोक देना समाज की बड़ी सफलता होगी। शायद यही इस पुस्तक की सबसे बड़ी उपलब्धि है कि यह हमें अपराधी को देखने के साथ–साथ अपने समाज को देखने के लिए भी प्रेरित करती है।

क्या कहता है नाग का रहस्य

बारिश का मौसम है। धरती में नमी है। खेतों में जीवन लौट रहा है। इसी समय सांप अपने प्राकृतिक आवासों से बाहर दिखाई देने लगते हैं। किसान के लिए सांप कभी भय का कारण रहा, तो कभी खेतों के पारिस्थितिक संतुलन का महत्वपूर्ण हिस्सा। यहीं से हमारी परंपरा ने एक अद्भुत संदेश दिया— जिससे डरते हो, उसे केवल मारो मत... उसे समझो।

सांप खाद्य श्रृंखला का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और कई प्रजातियां चूहों जैसे कृंतकों की संख्या नियंत्रित करने में भूमिका निभाती हैं। खेतों में चूहों की अधिकता फसल के लिए नुकसानदेह हो सकती है।इसलिए नागपंचमी को आधुनिक भाषा में देखें तो यह मानव और वन्यजीवन के सह-अस्तित्व का संदेश भी देती है।

आज जब शहर फैल रहे हैं, जंगल सिकुड़ रहे हैं और वन्यजीवों का प्राकृतिक आवास प्रभावित हो रहा है, तब नागपंचमी हमें एक महत्वपूर्ण सवाल पूछती है— क्या प्रकृति केवल वही है जिसका उपयोग मनुष्य कर सकता है? भारतीय दृष्टि कहती है— नहीं।नदी पूजनीय है। पर्वत पूजनीय है। वृक्ष पूजनीय है। पशु-पक्षी पूजनीय हैं। क्योंकि जिस प्रकृति को हम पूजते हैं, उसे नष्ट करने से पहले शायद हम दो बार सोचेंगे।

भारतीय पुराणों में नागों का संबंध अनेक देवताओं और कथाओं से मिलता है। भगवान शिव के गले में नाग हैं। भगवान विष्णु शेषनाग पर विराजमान हैं। समुद्र मंथन की कथा में वासुकी नाग का महत्वपूर्ण स्थान है। इन कथाओं को केवल घटनाओं के रूप में पढ़ने के बजाय इनके प्रतीकात्मक अर्थ को भी समझा जा सकता है। शेषनाग को अनंतता से जोड़ा जाता है। वासुकी शक्ति और सामूहिक प्रयास की कथा से जुड़ते हैं। और शिव के गले का नाग भय और विष पर नियंत्रण का प्रतीक बन जाता है।

यानी नाग केवल एक जीव नहीं रह जाता—वह भारतीय चिंतन में ऊर्जा, शक्ति, समय, भय और परिवर्तन का प्रतीक बन जाता है।

योग परंपरा में कुंडलिनी को सर्पाकार ऊर्जा के रूप में समझाया गया है। यहां नाग एक अद्भुत प्रतीक बन जाता है। सर्प कुंडली

नाग केवल एक जीव नहीं रह जाता—वह भारतीय चिंतन में ऊर्जा, शक्ति, समय, भय और परिवर्तन का प्रतीक बन जाता है।

मारकर बैठा है—जैसे मनुष्य के भीतर ऊर्जा सुप्त है। और जब वही ऊर्जा ऊपर उठती है, तो योग परंपरा इसे चेतना के जागरण से जोड़ती है। इसका आधुनिक अर्थ क्या हो सकता है? आज हमारा शरीर जाग रहा है, लेकिन हमारा मन लगातार उत्तेजना में है।

मोबाइल नोटिफिकेशन, सोशल मीडिया, लगातार स्क्रीन, काम का दबाव, प्रतिस्पर्धा और सूचना की बाढ़ ने हमारे मन को आराम देना लगभग बंद कर दिया है। हम बाहर से connected हैं, लेकिन भीतर से disconnected होते जा रहे हैं। नागपंचमी ऐसे समय में हमें भीतर लौटने का अवसर देती है।

अपने डर को देखो।
अपने क्रोध को देखो।
अपनी इच्छाओं को देखो।
अपने भीतर की ऊर्जा को पहचानो।
यही आध्यात्मिकता की शुरुआत है।

सर्प के साथ सबसे मजबूत शब्द जुड़ा है—विष। लेकिन आज हमारे जीवन में भी कई तरह के विष हैं। क्रोध का विष। ईर्ष्या का विष। अहंकार का विष। नकारात्मक सोच का विष। और आज के डिजिटल युग में— घृणा और ट्रोलिंग का विष।

सोशल मीडिया पर एक टिप्पणी किसी व्यक्ति के मन में घंटों नहीं, कई दिनों तक विष घोल सकती है। इसलिए नागपंचमी का आधुनिक संदेश यह भी हो सकता है— विष बाहर नहीं, पहले भीतर पहचानिए।

भगवान शिव के गले में नाग और नीलकंठ का दर्शन इसी संदर्भ में बेहद शक्तिशाली प्रतीक बन जाता है। जीवन में विष आएगा। प्रश्न यह नहीं कि विष आएगा या नहीं। प्रश्न यह है— क्या हम उसे अपने भीतर फैलने देंगे?

यहां एक जरूरी बात भी समझनी होगी। परंपरा का सम्मान करते हुए हमें अंधविश्वास से बचना चाहिए।सांपों की पूजा का अर्थ यह नहीं कि उन्हें पकड़कर परेशान किया जाए, उनके साथ प्रदर्शन किया जाए या उन्हें दूध पिलाया जाए। अधिकांश सांप दूध पीने वाले जीव नहीं हैं और उन्हें पकड़ना उनके लिए तथा मनुष्यों दोनों के लिए जोखिमपूर्ण हो सकता है। आज की नागपंचमी का सबसे सुंदर रूप यह हो सकता है कि— सांप को पकड़कर पूजा करने के बजाय उसके प्राकृतिक आवास को बचाया जाए। किसी सांप को देखकर उसे मारने के बजाय प्रशिक्षित रेस्क्यू टीम या वन विभाग की सहायता ली जाए। यही तो परंपरा और आधुनिकता का वास्तविक समन्वय है। भावना पुरानी रह सकती है, लेकिन व्यवहार वैज्ञानिक होना चाहिए।

धरती पर हर जीव का अपना स्थान है। हमारे भीतर हर भावना का अपना अर्थ है। और हमारी चेतना में परिवर्तन की अपार संभावना है। नाग को केवल बाहर मत खोजिए... उस प्रतीक को अपने भीतर भी पहचानिए। क्योंकि असली नागपंचमी शायद उस दिन होगी, जब हम प्रकृति के साथ भी संतुलन बना लें और अपने भीतर की ऊर्जा के साथ भी।

09
अगस्त
जीवेत शरदः शतम्
समाजसेवक मिलनसार मृदुभाषी
लोकप्रिय कुशल विधायक जन-जन के प्रिय
श्री मोतीलाल साहू जी
विधायक रायपुर ग्रामीण विधानसभा को
जन्मदिन
की
हार्दिक
शुभकामनाएं...
B J P
विनीत - समस्त मंडल अध्यक्ष, पदाधिकारी एवं कार्यकर्तागण, रायपुर ग्रामीण विधानसभा

छत्तीसगढ़ शासन

सरल सुगम सशक्त

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

प्रशासनिक सुधार

- सुशासन एवं अभिसरण विभाग की स्थापना
- ई-गवर्नेंस को बढ़ावा, ई-ऑफिस प्रणाली
- अटल डैशबोर्ड
- मुख्यमंत्री सुशासन फेलोशिप
- सीएम हेल्पलाइन 1076

राजस्व एवं पंजीयन सुधार

- प्रदेश में 119 पंजीयन कार्यालय बन रहे स्मार्ट
- भूमि विवाद रोकने जियो-रेफरेंसिंग
- 10 क्रांतियों और सुगम एप से आसान हुई रजिस्ट्री प्रक्रिया
- वनाधिकार पट्टा वितरण से मिला मालिकाना हक

ईज ऑफ डूइंग बिजनेस

- जन विश्वास 2.0 लागू करने वाला पहला राज्य
- इन्वेस्ट छत्तीसगढ़ पोर्टल के वन-क्लिक सिंगल विंडो सिस्टम से त्वरित स्वीकृति
- स्टार्टअप एवं नवाचार नीति 2025-30 लागू
- भारत सरकार द्वारा LEADS 2025 में लैंडलॉक्ड राज्यों में हाई परफॉर्मर की मान्यता

सेवाओं का डिजिटलीकरण

- 6,000+ पंचायतों में अटल पंचायत डिजिटल सुविधा केंद्र
- सेवा सेतु से 661 से अधिक सेवाएं एक ही डिजिटल प्लेटफॉर्म पर
- अस्थायी बिजली कनेक्शन के लिए ऑनलाइन सुगम प्रक्रिया

भ्रष्टाचार नियंत्रण एवं पारदर्शिता

- जेम पोर्टल से सरकारी खरीदी
- भर्ती परीक्षाओं में पारदर्शिता और नकल के विरुद्ध कठोर कानून
- खनिज ट्रांजिट पास की प्रक्रिया हुई पारदर्शी
- लकड़ी व खनिज ब्लॉक की पारदर्शी ई-नीलामी

श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

प्रशासनिक सुधार और नवाचार

प्रगति और समृद्धि का सपना हो रहा साकार

संवाद- 13953/103

छत्तीसगढ़ जनसंपर्क

Visit us : /ChhattisgarhCMO /DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in